अंक 03

ज्योतिष की राष्ट्रीय मासिक पत्रिका | सम्पादक : के. एम. सिन्हा (ज्योतिषाचार्य)

Kundali expert For Better Future

ज्योतिष विज्ञान

नवम्बर 2020

दीपावली विशेषांक

मूल्य 35 रूपये

- कौन जीतेगा बिहार चुनाव
- धनतेरस विशेष
- दीपावली विशेषांक
- गोवर्धन पूजा महत्व
- छठ पूजा विशेष
- नवम्बर राशिफल
- कुशीनगर विशेष
- त्रयम्बकेश्वर मंदिर
- ज्योतिष में कृतिका नक्षत्र
- ज्योतिष में स्वप्न का फल
- गोरखनाथ मंदिर विशेष
- थावे माता की महिमा
- करवा चौथ
- अष्टम भाव में शनि का प्रभाव
- हनुमान जंयती विशेष

ज्योतिषाचार्य

के.एम.सिन्हा

"जीवन की लड़ाईयाँ सदैव मजबूत और परिश्रमी लोग नहीं जीता करतें जीतता आज नही तो कल वहीं है, जिसेयकीन है की वो जितेगा"

तृतीय संस्करण

Publisher
KM ASTROGURU PVT. LTD,
B-1, 101, Block-E, Classic
Residency Apartment, Raj
Nagar Extenion, Ghazibad

Printed & Designed By
DS PRINT LAB
Shant Husain Nagar,
Padri Bazar Road, Gorakhpur

For ADS & Marketing
Please Contact
Nitish.soni@Kundaliexpert.com
Info@Kundaliexpert.com
Mobile : 9818318303
Landline No:. 0120-4732013

रासायनिक प्रवक्ता के रूप में करियर शुरू करने वाले, आज श्री के. एम. सिन्हा न केवल भारत में बल्कि दुनिया के कई अन्य हिस्सों में एक प्रसिद्ध वैदिक ज्योतिषी और कुंडली विशेषज्ञ है। वह कुछ राजनीतिक घटनाओं के बारे मे सटीक भविष्यवाणियाँ करने के लिए भी जाने जाते हैं। कुंडली एक्सपर्ट की अपनी मुख्य शाखा गाजियाबाद में स्थित है। उनकी भविष्यवाणी वैदिक ज्योतिष पर आधारित है जहां वे कुंडली या उसके द्वारा प्रदान किए गए समय, स्थान और तिथि के आधार पर विभिन्न ग्रहों की स्थिति का अध्ययन करते है। वह लोगों को उनकी समस्याओं को दूर करने और रोकने के उपाय भी बताते है।

ज्योतिषीय नियमों को गणितीय मॉडल मे अनुवाद करके उनके द्वारा ज्योतिषीय भविष्यवाणियाँ भी की गई है। एक ज्योतिषी बनने के अपने सपने को पूरा करने और आगे बढ़ने के लिए श्री के. एम. सिन्हा ने रसायन विज्ञान कोचिंग कक्षाएं प्रदान करना शुरू किया। ज्योतिष को आगे बढ़ाने के लिए अपने जीवन के 15 वर्षो को समर्पित किया और ज्योतिषीय सिद्धांतों का अध्ययन, विश्लेषण और समझना शुरू किया। ज्ञान प्राप्त करने की इस यात्रा ने अब उन्हें एक ज्योतिषी में बदल दिया है और पिछले 5-6 वर्षो से वह पेशेवर रूप से ज्योतिष का कार्य कर रहे हैं।

उनके अनुसार ज्योतिष एक विज्ञान है , जो विभिन्न ग्रहों की स्थिति के सिद्धांतों पर काम करता है। अलग-अलग घरों में विभिन्न ग्रहों की स्थिति लोगों के जीवन में बहुत प्रभावशाली भूमिका निभाती है। सटीक पूर्वानुमान प्राप्त करने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान और जन्म तिथि के बारे में सही जानकारी होना बहुत महत्वपूर्ण है।

के.एम.सिन्हा, के अनुसार जन्म का समय, जन्म का तारीख और जन्म का स्थान प्रदान करके बनाई गई कुंडली बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि कुंडली किसी भी ज्योतिषीय भविष्यवाणियों को बनाने का आधार है। जन्म कुंडली में 12 घर होते हैं, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं को नियंत्रित करते हैं। तारों की स्थिति, ग्रहों की स्थिति जन्म तारीख, स्थान और समय के अनुसार इन घरों में बदलते रहती है जो लोगो के जीवन में विभिन्न प्रभाव डालती है।

ज्योतिषीय भविष्यवाणियों से जो लाभ प्राप्त हो सकता है, वह यह है कि लोगो के उनके जीवन के कठिन समय से अवगत कराया जा सकता है , उनके समस्याओं का समाधान और उपायों को बताया जा सकता है। इसके अलावा, कोई कैसे अच्छे समय का पूरा उपयोग कर सकता है और इसे अपने पक्ष में कर सकता है इस बात पर भी जोर दिया जाता है।

मुख्य रूप से गाजियाबाद में स्थित, दिल्ली में सर्वश्रेष्ठ ज्योतिषी के.एम.सिन्हा एक प्रसिद्ध कुंडली विशेषज्ञ है और उन्होने कई व्यक्तिगत और राजनीतिक भविष्यवाणियां सटीक रूप से किया है । व्यक्तिगत जीवन, पेशा, करियर से सम्बंधित या स्वास्थ्य आदि से सम्बंधित कोई भी समस्या हो, परामर्श कर सकता है। और विशेषज्ञ से सलाह ले सकता है। वह हस्तरेखा विज्ञान और अंक शास्त्र के माध्यम से भी भविष्यवाणियाँ करते है। एक कुडली चार्ट तैयार कर कुंडली का विश्लेषण कर भविष्यवाणी तथा उपायों को कुंडली विशेषज्ञ द्वारा नाममात्र राशि पर प्रदान की जाती है। यह नाममात्र शुल्क एक वर्ष के लिए वैध है और कोई भी वर्ष के दौरान कभी भी ज्योतिषीय सलाह ले सकता है ।

ज्योतिष विज्ञान के इस तृतीय संस्करण में पूरी कोशिश की गई है कोई कमी ना रहें फिर भी यदि कोई त्रुटि पाठक के जानकारी में आती है तो अपने सुझााव info@kundaliexpert.com पर भेज सकते है । आप सभी का बहुत आभार ।

विषय सूची

कौन जीतेगा बिहार चुनाव....4
धनतेरस विशेष 5
शुभ दीपावली 6.-8
गोर्वधन पूजा 8-9
ज्योतिष में स्वप्न का फल 9-10
ज्योतिष में कृतिका नक्षत्र 10-13
गोरखनाथ मंदिर विशेष 13-14
छठ पूजा विशेष 15-16
थावे माता की महिमा 16-17
नवम्बर राशिफल....17-19
कुशीनगर विशेष 19-20
त्रयम्बकेश्वर मंदिर 20-21
महाकालेश्वर मंदिर 21-22
हनुमान जयन्ती विशेष 22-23
करवा चौथ विशेष 23-25
अष्टम भाव में शनि का प्रभाव 25-29
आपके प्रश्नों के उत्तर 29

© All Right Reserved to KM ASTROGURU PVT. LTD.

All rights reserved. Full or No part of this book may be reproduced in any form by an electronic or mechanical means, including any information storage and retrieval systems, without the permission in writing from the publisher.

WHY SHOULD YOU MUST CONSULT WITH

ASTROLOGER KM SINHA

ASTROLOGER
KM SINHA

CONSULTATION TYPE

IT'S
KM ASTROGURU
PVT.LTD.

	1 or 2 Questions Fee = 3100 + G-S.T.	Full Analysis Fee = 5100 + G-S.T.
KUNDALI PDF	✓	✓
3 FOLLOWUP	✓	✓
CUSTOMIZED LIFE REPORT	✓	✓
JYOTISH VIGYAN	✓	✓
CUSTOMIZED DAILY HOROSCOPE	✓	✓
CUSTOMIZED WEEKLY HOROSCOPE	✗	✓
CUSTOMIZED MONTHLY HOROSCOPE	✗	✓
CUSTOMIZED RASHI PARIVARTAN	✗	✓
FULL MOBILE ACCESS	✗	✓

VALID TILL 1 YEAR

कौन जीतेगा बिहार चुनाव 2020
(ज्योतिषीय विश्लेषण)

28 अक्टूबर से 07 नवम्बर 2020 में बिहार चुनाव होंगे जिसमें मुख्य पार्टी एनडीए और महागठबंधन के बीच मुकाबला होगा। एनडीए में 122 सीट जेडीयू और 121 सीट बीजेपी चुनाव में उम्मीदवार उतरेगें जबकि महागठबंधन में 144 सीट आरजेडी और 70 सीटें कांग्रेस के उम्मीदवार अपने किस्तम को आजमाएगें बाकि की सीटें महागठबंधन की सहयोगी पार्टी चुनाव लडेगें।

भारतीय जनता पार्टी की स्थपना 06 अप्रैल 1980 को हुई थी। इनकी सूर्य कुण्डली विश्लेषण करने पर पता चलता है की इनकी वर्तमान दशा सूर्य में बुध की 26 फरवरी 2021 तक चलेगी। और गोचर में सूर्य नीच के अष्टम स्थान में रहेंगे। और गोचर का शुक्र नीच का सहयोगी दलों के स्थान पर रहेगा। अर्थात भाग्य का भरपूर साथ मिलना मुश्किल रहेगा, और गोचर भी बहुत ज्यादा सहयोग नहीं करने वाला अतः भारतीय जनता पार्टी का प्रदर्शन सबसे बड़े दल के रूप में तो हो सकता है। परन्तु त्रिशंकु विधानसभा होने की संभावना ज्यादा दिखाई दे रही है।

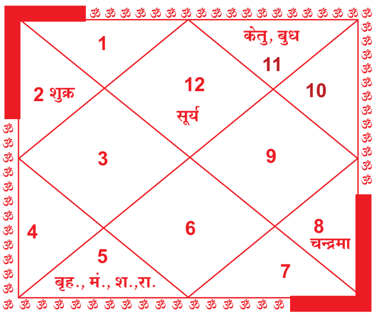

भा.जा.पा की सूर्य कुण्डली

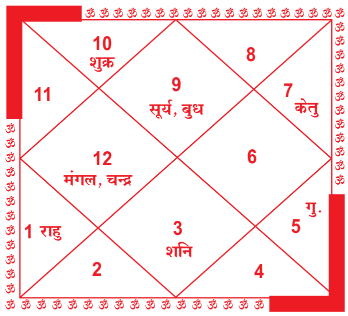

जेडीयू की सूर्य कुण्डली

इनकी सहयोगी पार्टी जेडीयू जिसके वर्तमान मुख्यमंत्री नीतिश कुमार है, कि स्थापना 30 दिसम्बर 2003 में हुई थी। इनकी वर्तमान में बुध के अन्दर सूर्य की महादशा चल रही है जो कि 20 जनवरी 2021 तक चलेगी गोचर में राहु का भ्रमण छठवें भाव में होगा अतः प्रतियोगिता में इनका प्रदर्शन राहु के कारण अच्छा रहेगा परन्तु बाकि ग्रहों की गोचरीय व्यवस्था इनके अनुकूल नहीं दिखाई दे रही है। और पहले से इन्हे कम सीट मिलेगी।

जहा तक महागठबंधन का सवाल है आरजेडी जो कि लालू यादव की पार्टी है स्थापना 05 जुलाई 1997 में हुई थी। और इनके लग्न से द्वादश स्थान पर राहु का गोचर इनको पहले के मुकाबले ज्यादा बली बनाएगा और इनकी वर्तमान दशा शनि के अन्दर शुक्र की चल रही है जो 7 मई 2021 तक चलेगी। और ये दशा इनके लिए अच्छी रहेगी और गोचर का शनि और राहु और चतुर्थ स्थान को स्वामी बुध इनको ज्यादा सीटें प्रदान करेगा। इनकी सहयोगी घटक दल कांग्रेस स्थापना 28 दिसम्बर 1885 में हुई थी इनकी वर्तमान दशा राहु में मंगल की चल रही है जो 30 नवम्बर 2021 तक चलेगी और गोचर भी इनका सहयोग नहीं देता दिख रहा है। अतः महागठबंधन में कांग्रेस को पहले से ज्यादा नुकसान हो सकता है। और कुल मिलाकर त्रिशंकु विधानसभा के योग बन रहे है।

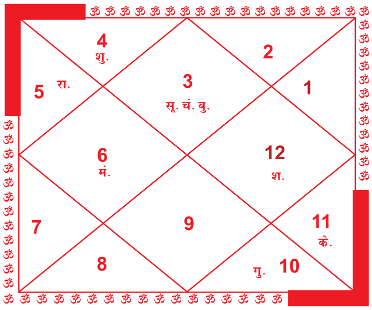

आरजेडी की सूर्य कुण्डली

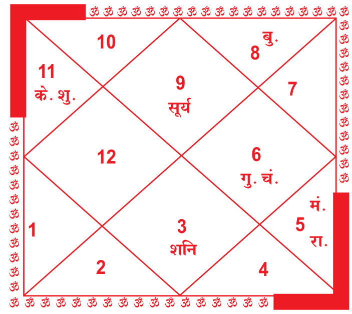

कांग्रेस की सूर्य कुण्डली

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि जेडीयू और आरजेडी की कुण्डली मजबूत दिखाई दे रही है परन्तु कोई भी दल अकेले अपने दम पर चुनाव नहीं जीत सकता अर्थात बहुमत का आकाड़ा है उसमें सीटें कम रह जायेगी । कौन सी पार्टी कितनी सीटे जीतेगीं इसके बारे में हमारे यूट्यूब चैनल कुण्डली एक्सपर्ट पर प्रकाशित कर दिया गया।

दीपावली में की जाती है धन के देवता की पूजा :

धनतेरस का त्यौहार कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को मनाया जाने वाला पर्व धनतेरस या धनत्रयोदशी के नाम से जाना जाता है। दीपावली के दो दिन पहले आने वाले इस त्यौहार का हिन्दू धार्म में बहुत ही ज्यादा विशेष महत्व है । और दीपावली का पाँच दिनों तक चलने वाले त्यौहार में पहला त्यौहार धनतेरस का होता है यह दिन विशेष रूप से महिलाओं के लिए खरीदारी करने का महत्वपूर्ण त्यौहार है। इस दिन महिलाए, सोना, चाँदी और पीतल की वस्तुएँ खरीदती है और इस दिन यह सारी चीजे खरीदना शुभ माना जाता है और यह भी माना जाता है की इस दिन भगवान धन्वंतरी की पूजा की जाती है । जिस समय समुंद्र मंथन हो रहा था । उस समय भगवान धन्वन्तरी 14वें रत्न के रूप में समुद्र मंथन से बाहर आए थे । इस दिन भगवान धन्वंतरी के साथ-साथ भगवान गणेश, माता लक्ष्मी और कुबरे जी की पूजा भी की जाती है । और धनतेरस के ही पहले दिन से दीपावली के त्यौहार आरम्भ हो जाता है । तो आइए हम देखते है । धनतेरस 2020 की तिथि, धनतेरस का शुभ मुहूर्त धनतेरस की पूजा विधि और धनतेरस की कथा ।

धनतेरस 2020 तिथि और शुभ मुहूर्त :

धनतेरस तिथि - 13 नवंबर 2020 धनतेरस पूजा शुभ मुहूर्त - शाम 5 बजकर 28 मिनट से शाम 5 बजकर 59 मिनट तक (13 नवम्बर 2020), प्रदोष काल मुहूर्त - शाम 5 बजकर 28 मिनट से राज 8 बजकर 07 मिनट तक (13 नवम्बर 2020), वृषभ काल मुहूर्त - शाम 5 बजकर 32 मिनट से शाम 7 बजकर 28 मिनट तक । त्रयोदशी तिथि आरम्भ - रात 9 बजकर 30 मिनट बजे से (12 नवम्बर 2020), त्रयोदशी तिथि समाप्त - अगले दिन शाम 5 बजकर 59 मिनट तक ।

धनतेरस का महत्व :

हिन्दू धर्म में देखा जाए तो द्वीपो का पर्व दीपावली का बहुत ही विशेष महत्व है । दीपावली का पर्व कहा जाता है की प्रभु श्री राम के अयोध्या वापस लौटने की खुशी में मनाया जाता है । पाँच दिन के दीपावली के इस पर्व में सबसे पहला पर्व धनतेरस का आता है । धनतेरस के दिन से ही माता लक्ष्मी की पूजा, गणेश जी की पूजा और कुबेर जी की पूजा आरम्भ कर दी जाती है पुराणों के अनुसार जिस समय देवता और असुर समुंद्र मंथन कर रहे थे उस समय समुंद्र मथन में से 14 रत्न निकले थे । इन्ही एक भगवानों में से धन्वंतरी धनत्रयोदशी के दिन अपने हाथ में पीतल का अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे । इसी कारण से ही इस दिन पीतल की वस्तुएँ खरीदना बहुत ही शुभ माना जाता है । वही पहलें की मान्यताओं के अनुसार इस दिन कहा जाता है कि नई-नई वस्तुओं की खरीदारी करने से घर में धन की देवी माता लक्ष्मी और धन के देवता कहे जाने वाले भगवान कुबेर का वास होता है। इस दिन विशेष रूप से सोना, चाँदी और पीतल की वस्तुओं को घर में लाना बहुत ही शुभ माना जाता है । इस दिन नया झाडू खरीदने की भी परम्परा चली आ रही है कहा जाता है कि झाडू में माता लक्ष्मी का वास होता है । जिसे घर मे लाने से घर की सभी नकारात्मक ऊर्जाएँ समाप्त हो जाती है । धनतेरस का त्यौहार सिर्फ हिन्दू धर्म ही नही बल्कि सभी धर्म के लोग भी कही न कही इस त्यौहार को मनाते ही है । और जैन धर्म में भी इस त्यौहार को बहुत ही महत्व दिया जाता है । माना जाता है कि धनतेरस के दिन महावीर स्वामी ध्यान मुद्रा में चले गये थे और दीपावली के दिन ही उन्होने मोक्ष को प्राप्त किया था ।

धनतेरस की पूजा विधि :

1. धनतेरस के दिन सबसे पहले भगवान गणेश, माता लक्ष्मी, भगवान धनवंतरी और कुबेर जी की पूजा की जाती है ।
2. इस दिन शाम के समय प्रदोष काल में पूजा करना बहुत की शुभ माना जाता है
3. इस दिन पूजा करने से पहले आपकों स्नान करके साफ सूथरे वस्त्र धारण करने चाहिए ।
4. इसके बाद एक साफ चौकी लेकर उस पर गंगाजल छिड़ककर पीला या लाल कपड़ा बिछाएं और अन्न की ढ़ेरी लगाएं ।
5. कपड़ा बिछानें के बाद भगवान गणेश, माता लक्ष्मी, मिट्टी का हाथी भगवान धनवंतरी और भगवान कुबेर जी की प्रतिमा स्थापित करें
6. सबसे पहले भगवान गणेश जी का पूजन करें उन्हें सबसे पहले पुण्य और दुर्वा अर्पित करें और उनका विधिवत पूजन करें । इसकें बाद हाथ में अक्षत लेकर भगवान धनवंतरी का ध्यान करें ।
7. इसके बाद भगवान धनवंतरी को पंचामृत से स्नान कराकर उनका रोली व चंदन से तिलक करें और उन्हे पीले रंग की पुष्प अर्पित करें ।
8. पुष्प अर्पित करने के बाद उन्हें फल और नैबेध अर्पित करें और उन पर इत्र छिड़कें ।
9. इसके बाद धनवंतरी के मंत्रो का जाप करें और उनके आगे तेल का दीपक जलाएं ।
10. तेल का दीपक जलाने के बाद धनतेरस की कथा पढ़े और उनकी धूप व द्वीप से आरती उतारें ।
11. इसके बाद भगवान धनवंतरि को पीले रंग की मिठाई का भोग लगाएं और अंत में माता लक्ष्मी और कुबेर जी का भी पूजन करें ।
12. और जब आप अपनी पूजा विधि पूर्वक करके समाप्त कर लें तो अपने घर में मुख्य द्वार पर दोनों और तेल के दीपक अवश्य जलाएं ।

धनतेरस की कथा :

कहा जाता है कि बहुत साल पहले किसी राज्य में एक राजा था, जिसे कई वर्षो तक की प्रतीक्षा के बाद पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई राजा के पुत्र के बारे में किसी योग्य ज्योतिषी ने बताया था कि जिस दिन भी उसका विवाह होगा, उसके चार दिन बाद ही उसकी मृत्यु हो जाएगी । ज्योतिषी की यह बात सुनकर राजा को बहुत ही दुख हुआ और राजा ने अपने पुत्र को बहुत ही दूर किसी ऐसी जगह पर भेज दिया, जहां आस-पास कोई स्त्री न रहती हो । एक दिन वहां से एक राजकुमार गुजरी । राजकुमार और राजकुमारी दोनों ने एक दूसरे को देखा और मोहित होकर दोनो ने आपसे में विवाह कर लिया । ज्योतिषी की भविष्यवाणी के अनुसार ठीक चार दिन बाह यमदूत राजकुमार के प्राण लेने आ पहुचें । औश्र यमदूत को देखकर राजकुमार की पत्नी विलाप करने लगी । यह देखकर यमदूत ने यमराज से विनती की और कहा कि इसके प्राण बचाने का कोई और उपाया बताइए । इस पर यमराज ने कहा की जो प्राणी कार्तिक पक्ष की त्रयोदशी की रात मेरा पूजन कर दीप माता से दक्षिण दिशा की ओर मुंह वाला दीपक जलाएगा उसे कभी अकाल मृत्यु का भय नहीं रहेगा । तभी से इस दिन घर से बाहर दक्षिण दिशा की ओर दीप जलाने की परम्परा है ।

पूरे भारतवर्ष में दीपावली का त्यौहार बहुत महत्व रखता है । दीपावली का त्यौहार पूरे भारतवर्ष में उत्साह से मनाया जाने वाला हिन्दुओं का त्यौहार है जिसे सब पूरे उत्साह के साथ मानते है। दीपावली का त्यौहार विशेष रूप से प्रभू श्री राम की अयोध्या वापसी के उपलक्षय में मनाया जाता है। जिसमें लोगो ने उनका स्वागत घी के दिये जलाकर किया । जिससे अज्ञनता का अंधकार समाप्त हो गया और हर जगह ज्ञान का प्रकाश फैल गया । इसलिए दीपावली को प्रकाश का त्यौहार कहा जाता है । दीपावली का त्यौहार जब आता है तो साथ में अनेक त्यौहार लेकर आता है । सुख समृद्धि की कामना के लिए दीपावली से बढ़कर और कोई त्यौहार नहीं होता इसलिए इस अवसर पर लक्ष्मी जी की पूजा भी की जाती है । वर्तमान में तो इस त्यौहार में लोग धार्मिक भेदभाव को भी भुला दिया है, यही कारण है कि सभी धर्म के लोग दीपावली के त्यौहार को अपने - अपने तरीके से मनाने लगे है । लेकिन भारतवर्ष में विशेषकर हिंदूओं में दीपावली का त्यौहार बहुत मायने रखता है ।

दीपावली और लक्ष्मी पूजा

दीपावली में माता की कृपा प्राप्त हों, घर में सुख समृद्धि हमेशा बनी रहे और माँ लक्ष्मी स्थिर रहें और माँ लक्ष्मी कि कृपा हमेशा बनी रहे इसके लिए दिनभर माँ लक्ष्मी का उपवास रखने के उपरान्त सूर्यास्त के पश्चात प्रदोष काल के दौरान स्थिर लग्न (वृषभ लग्न को स्थिर लग्न माना जाता है) में माँ लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए । लग्न व मुहूर्त का समय स्थान के अनुसार ही देखना चाहिए ।

दीपावली का शुभ मुहूर्त

14 नवम्बर

लक्ष्मी पूजा मुहूर्त - 17:28 से 19:23

प्रदोष काल - 17:23 से 20:04

वृषभ काल - 17:28 से 19:23

अमावस्या तिथि आरंभ - 14:17 (14 नवम्बर)

अमावस्या तिथि समाप्त-10:36(15 नवम्बर)

दिपावली का महत्व

दीपावली विशेष रूप से हिन्दूओं का त्यौहार है लेकिन यह विदेशों में भी बहुत ही उत्साह से मनाया जाने वाला त्यौहार हैं, जैसे - भारत, नेपाल, सिंगापुर, मलेशिया, श्रीलंका, इंडोनेशिया, मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिनाद और दक्षिण अफ्रीका में मनाया जाता हैं । लोग दीपावली में अपने घरों की साफ-सफाई करते है, दीप जलाते हैं,पटाखे फोड़ते हैं, लोग एक दूसरे को दीपावली की शुभकामनाऐं देते है और मिठाईयों बाँटते हैं । इन पटाखों के तरह ही हमारे अन्दर की सारी बुरी आदते भी जलाकर राख हो जाती है । और मन एक नया सा बन जाता है । इस त्यौहार में हम रोशनी को ज्ञान का दयोतक मानते हुए हम ज्ञान रूपी प्रकाश करते हैं, और इस दीपावली का त्यौहार हम बड़े ही हर्षोउल्लास के साथ मानते हैं । दीपावली की रात को आतिशबाजी आसमान को रोशन कर देती है । बाद में परिवार और आमंत्रित सदस्य भोजन और मिठाईयाँ ग्रहण करते है और खुशी के साथ दीपावली मनाते हैं ।

आध्यात्मिक महत्व

▪ दीपावली को विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं, कहानियों या मिथकों को चिन्हित करने के लिए हिंदू, जैन और सिखों द्वारा मानायी जाती है लेकिन वे सब बुराई पर अच्छाई, अंधकार पर प्रकाश, अज्ञान पर ज्ञान और निराशा पर आशा कि विजय को दर्शाते है ।

▪ हिन्दूओं के योग, वेदान्त और सांख्य दर्शन में यह विश्वास है कि इस भौतिक शरीर और मन से परे वहाँ कुछ है जो शुद्ध अनन्त और शाश्वत है । जिसे आत्मन् या आत्मा कहा गया है । दीपावली, आध्यात्मिक अन्धकार पर आन्तरिक प्रकाश, अज्ञान पर ज्ञान, असत्य पर सत्य और बुराई पर अच्छाई का उत्सव है ।

ऐतिहासिक महत्व

आइए हम दीपावली के ऐतिहासिक महत्वों को जानतें हैं । प्राचीन काल के समय में पंजाब में जन्मे स्वामी रामतीर्थ का जन्म व महाप्रयाण दोनों दीपावली के दिन हुआ । इन्होने दीपावली के दिन गंगातट पर स्नान करते समय 'ऊँ' कहते हुए समाधि ले ली । महर्षि दयानन्द ने भारतीय संस्कृति के महान जननायक बनकर दीपावली के दिन ही अजमेर के निकट अवसान लिया । तथा इन्होने आर्य समाज की स्थापना की थी । दीन-ए-इलाही के प्रवर्तक मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल में दौलतखाने के सामने 40 गज ऊँचे बाँस पर एक बड़ा आकाशद्वीप दीपावली के दिन लटकाया जाता था । बादशाह जहाँगीर भी दीपावली धूमधाम से मनाते थे । मुगल वंश के अंतिम सम्राट बहादुर शाह जफर भी दीपावली का त्यौहार मनाते थे और इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में वे भाग लेते थे । शाह आलम द्वितीय के समय में समूचे शाही महल को दीपों से सजाया जाता था एवं लाल किलें में आयोजित कार्यक्रमों में हिन्दू-मुसलमान दोनो ही भाग लेते थे ।

आर्थिक महत्व

दीपावली का त्यौहार आर्थिक रूप से देखा जाए तो इस पर खर्च और खरीद को शुभ माना जाता है, क्योंकि लक्ष्मी को, धन, समृद्धि और निवेश की देवी माना जाता है । दीपावली भारत में सोने और गहने की खरीद का सबसे अच्छा समय हैं । दीपावली का पर्व नए कपड़े, घर के समान, उपहार, सोने और अन्य बड़ी खरीदारी का समय होता है । इस समय में मिठाई, कैंडी और आतिशबाजी की खरीद भी अपने चरम सीमा पर रहती हैं और यह बता दें कि प्रत्येक वर्ष दीपावली के दौरान पाँच हजार करोड़ रूपये के पटाखों आदि की खपत होती है

वायु प्रदूषण एवं अन्य चिन्तनीय पक्ष

दुनिया के अन्य प्रमुख त्यौहारों के साथ ही दीपावली का त्यौहार भी पर्यावरण और स्वास्थ्य पर इसका पड़ने वाला प्रभाव चिन्ता योग्य है ।

वायु प्रदूषण

प्रत्येक विद्वानों के अनुसार लोगों को समस्या जितना आतिशबाजी के दौरान वायु प्रदूषण से नहीं होता उससे ज्यादा आतिशबाजी के बाद वायु प्रदूषण से देखने को

मिलतें हैं, जो प्रत्येक बार पूर्व दीपावली के स्तर से करीब चार गुना बदतर पाया जाता है। अतः इस अध्ययन की वजह से यह पता चलता है कि आतिशबाजी के बाद हवा में धूल के महीन कण (en:PM2.5) हवा में उपस्थित रहते है यह प्रदूषण स्तर एक दिन के लिए रहता है, और प्रदूषण सांद्रता 24 घंटे के बाद वास्तविक स्तर पर लौटने लगती हैं। अत्री एट अल कि रिर्पोट के अनुसार नए साल कि पूर्व संध्या या सम्बंधित राष्ट्र के स्वतंत्रता दिवस पर दुनिया भर में आतिशबाजी समारोह होते हैं जो कि ओजोन परत में छेद के कारक होते है।

जलने कि घटनाएँ

दीपावली की कई सारी आतिशबाजी के दौरान भारत में जलने की चोटों में वृद्धि पायी गई है। अनार नामक एक पटाखा को 65% चोटो का कारण पाया गया है। और अधिकांशतः वयस्क लोग ही इसके शिकार होते हैं। समाचार पत्र, घाव पर समुचित नर्सिंग के साथ प्रभावों को कम करने में मदद करने के लिए जले हुए हिस्से पर तुरंत ठंडे पानी को छिडकनें की सलाह देतें है। अधिकांश चोटे छोटी ही होती जो कि प्राथमिक उपचार करने से भर जाती है।

दीपावली की प्रार्थनाए

क्षेत्र के अनुसार प्रार्थनाएं अलग-अलग होती है, उदाहरण के लिए वृहदारण्यक उपनिषद की ये प्रार्थना जिसमें प्रकाश उत्सव चित्रित है :

असतों मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय।
ऊँ शान्ति : शान्ति : शान्ति : ।।

अनुवाद :

असत्य से सत्य की ओर।
अंधकार से प्रकाश की ओर।
मृत्यु से अमरता की ओर। (हमे ले जाओं)
ऊँ शांति शांति शांति ।।

दीपावली में कैसे प्रसन्न करें माँ लक्ष्मी को

ज्योतिषाचार्य के.एम.सिन्हा के अनुसार :

ज्योतिष में दीपावली की रात्रि का विशेष महत्व है। इस रात्रि लक्ष्मीजी भ्रमण करती है अमावस्या जैसी काली रात में असुर शक्तियों पर प्रभु राम की विजय के प्रतीक पर्व पर अनोखे शुभ मुहूर्त होने से इस रात को किए गये कार्यो में सफलता मिलती है और लक्ष्मीजी प्रसन्न होती है। तो आइए हम जानते है कि इस दिन लक्ष्मी जी को कैसे प्रसन्न करें।

दीपावली पर आप भी इन छोटे उपायों को करके महालक्ष्मी को प्रसन्न कर उनकी कृपा पा सकते है।

1. दीपावली के दिन अगर माता को प्रसन्न करना है तो प्रातः काल माँ लक्ष्मी के मंदिर जाकर उन्हें वस्त्र चढ़ाएं और खूशबुदार गुलाब की अगरबती जलाएं, धन प्राप्ति का मार्ग खुलेगा।

2. दीपावली के दिन प्रातः में गन्ना लाकर रात्रि में लक्ष्मी पूजन के साथ गन्ने की भी पूजा करने से आपकी धन संपत्ति में वृद्धि होंगी।

3. दीपावली की रात पूजन करने के पश्चात् नौ गोमती चक्र तिजोरी में रखकर स्थापित करने से वर्षभर समृद्धि और खुशहाली बनी रहेगी।

4. दीपावली के दिन या अन्य किसी भी दिन आपको अगर यह लगता है कि धन घर में नहीं रूकता तो नरक चतुदर्शी के दिन श्रद्धा और विश्वास के साथ लाल चंदन, गुलाब के फूल व रोली लाल कपड़े में बाँधकर पूजे और फिर उसे अपनी तिजोरी या पैसे की जगह में रखें, धन घर में रूकेगा और वृद्धि भी होगी।

5. दीपावली से आरम्भ करते हुए प्रत्येक अमावस्या की शाम को किसी अपंग भिखारी या विकलांग व्यक्ति को भोजन कराएं तो सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है।

6. अगर विद्यार्थीयों के जीवन में काफी प्रयास करनें के बाद भी नौकरी नही मिल रही हो तो पूजन के समय थोड़ी सी चने की दाल लक्ष्मीजी पर छिडककर बाद में इकठ्ठी करके पीपल के पेड़ पर समर्पित कर दें, नौकरी लगने की संभावना बढ़ जाएगी।

7. यदि किसी व्यक्ति जो दुकानदार, व्यवसायी दीपावली की रात्रि को साबुत फिटकरी लेकर उसे दुकान में चारो तरफ धुमाऐं और किसी चौराहें पर जाकर उसे उत्तर दिशा कि तरफ फेंक दे, ऐसा करने से ज्यादा ग्राहक आएंगे और धन लाभ में वृद्धि होगी।

8. दीपावली पर पूजन के समय माँ लक्ष्मी को कमलगट्टे कि माला पहनाएं और अगले दिन सवेरे लाल कपड़े में वह माला बाँधकर घर में अपने पैसे रखने की जगह पर रखें और वह रखते समय तीन बार "ऊँ महालक्ष्म्यै नमः" बोले।

9. दीपावली की रात्रि पांच साबुत सुपारी, काली हल्दी और पाँच कौड़ी लेकर गंगाजल से धोकर लाल कपड़े में बाँधकर दीपावली पूजन के समय चाँदी की कटोरी या थाली में रखकर पूजा करें, और अगले दिन सवेरे सारा सामान धन रखने वाली जगह में रखें। हमेशा माँ लक्ष्मी की कृपा बनी रहेगी।

10. दीपावली के दिन गरीबों को कपड़ा, धन व मिठाई देकर सहायता करें आप पर माँ लक्ष्मी की कृपा बनी रहेगी।

- अतः आपने देखा कि किसी व्यक्ति के ऊपर माँ लक्ष्मी कि कृपा दृष्टि नहीं बन पा रही है तो आप इन सभी उपायों को करकें अपने जीवन में माँ लक्ष्मी कि कृपा पाकर अपने जीवन को सुख समृद्धि प्रदान कर सकते हैं। माँ लक्ष्मी कि कृपा सदैव आप पर बनी रहेगी।

दीपावली में क्यों होती है नवीन मूर्ति की पूजा

- दीपावली का ज्योतिष शास्त्र में महत्व होने के साथ-साथ इस परम्परा को वर्तमान में जीवित रखना भी बहुत बड़ी बात है। ऐसे में कुछ पुरानी परम्पराओं को माननें वाले व्यक्तियों के मन मे एक सवाल तो विशेष रूप से रहती है कि क्या दीपावली में नवीन मूर्ति से ही पूजा करनी चाहिए और अगर नवीन मूर्ति

किस-किस बातों का ध्यान रखते हुए हम मूर्ति को चुने। इस तरह कि बातें बहुत से लोगों के मन में रहती है तो आइए हम थोड़ा देखतें है कि दीपावली में किन बातों का ध्यान रखकर लक्ष्मी-गणेश जी कि मूर्ति खरीदते है।

गणेश जी कि मूर्ति खरीदते समय इन बातों का रखें खास ध्यान :

- गणेश जी कि मूति खरीदतें समय हमेश ध्यान रखे कि लक्ष्मी गणेश जी कभी एक साथ जुड़े हुए नही खरीदना चाहिए। अपने पूजाघर में रखने के लिए लक्ष्मी जी और गणेश जी कि ऐसी मूर्ति लेनी चाहिए जिसमें दोनों विग्रह अलग-अलग हों।
- गणेश जी कि मूर्ति खरीदतें समय यह ध्यान देना होता है कि उनकी सूंड बाए हाथ की तरफ मुड़ी होनी चाहिए। दाएं हाथ के तरफ मुड़ी हुई सूंड शुभ नही होती है और ध्यान रहे सूंड में दो घुमाव भी नहीं होना चाहिए।
- मूर्ति खरीदतें समय इस बात का भी ध्यान रहे कि हमेशा गणेश जी के हाथ में मोदक लिए हुए मूर्ति ही खरीदें ऐसी मूर्ति खरीदने पर मूर्ति सुख समृद्धि का प्रतीक मानी जाती है।
- और गणेश जी कि मूर्ति खरीदतें समय उनके वाहन मूषक की उपस्थिति अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। सोने, चाँदी पीतल या अष्टधातु की मूर्ति खरीदने के साथ-साथ क्रिस्टल के लक्ष्मी-गणेश की पूजा करना शुभ होता है।

लक्ष्मी की मूर्ति खरीदते समय इन बातों का रखें ध्यान :

- माता लक्ष्मी जी कि मूर्ति खरीदने समय यह ध्यान देना होता है कि माँ लक्ष्मी की ऐसी मूर्ति न खरीदे जिसमें माँ लक्ष्मी उल्लू पर विराजमान हों। ऐसी मूर्ति को काली लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है।
- माता लक्ष्मी कि ऐसी मूर्ति लेनी चाहिए जिसमें लक्ष्मी माता कमल पर विराजमान हो और उनका हाथ वरमुद्रा में हो और धन की वर्षा करता हो।
- और लक्ष्मी माँ कि ऐसी मूर्ति ना लेकर आए जिसमें वो खड़ी हो। ऐसी मूर्ति लक्ष्मी माँ के जाने की मुद्रा से तैयार माना जाता है।

इसलिए करते है नई मूर्ति की पूजा :

- दीपावली के दिन माँ लक्ष्मी और गणेश जी कि पूजा हर साल की जाती है और हर साल मूर्ति बदलने को लेकर अलग-अलग मान्यताएं है। कई लोग इसें मंदिर में मूर्ति बदलने का एक अवसर मानते है और यह सही भी है इसी बहानें से साल में एक बार मूर्ति बदलना दीपावली में एक अच्छा अवसर माना जाता है। तो कुछ लोग लक्ष्मी-गणेश की नई मूर्ति की पूजा को धर्म से जोड़तें है। लेकिन शास्त्रों में कही भी नई मूर्ति की पूजा से जुड़ी बातें देखने को नहीं मिली है। मान्यता ये भी है कि पुराने समय में सिर्फ धातु और मिट्टी की मूर्तियों का ही चलन था और धातु की मूर्ति से ज्यादा मिट्टी की मूर्ति की पूजा होती थी। जो हर साल खंडित और बदरंग हो जाती है और बड़ी वजह यह भी है कि कुम्हारों की आर्थिक मदद को ध्यान में रखते हुए नई मूर्ति खरीदनें की शुरूआत की गई। तथा कई ऐसी मान्यताएं यह भी है कि नई मूर्ति एक आध्यात्मिक विचार का भी संचार करती हैं, जो गीता में श्रीकृष्ण ने भी दिया है। तथा नई मूर्ति लाने से घर में नई ऊर्जा का संचार होता है।

गोवर्धन पूजा

- दीपावली का पर्व खत्म होने के बाद कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा पर उत्तर भारत में मनाया जाने वाला गोवर्धन पूजा का त्यौहार बड़े ही धूम-धाम से मनाया जाता है इस त्यौहार में हिन्दू धर्म को मानने वाले लोग घर के आंगन में गाय के गोबर से गोवर्धन नाथ जी की अल्पना बनाकर उनका पूजन करते है। उसके बाद ब्रज के साक्षात देवता माने जाने वाले गिरिराज भगवान (पवर्त) को प्रसन्न करने के लिए उन्हे अन्नकूट का भोग लगाया जाता है। गोवर्धन भगवान की पूजा की परम्परा द्वापर युग से चली आ रही है। इसके पहले इस युग में और ब्रज में भी भगवान इन्द्र की पुजा की जाती थी परन्तु भगवान श्रीकृष्ण ने तर्क देते हुए कहा कि गोवर्धन पर्वत गौधन का संबर्धन एवं संरक्षण करता है, जिससे पर्यावरण भी शुद्ध होता है। इसलिए इंद्र की नहीं गोवर्धन की पूजा की जानी चाहिए इस प्रकार भगवान कृष्ण ने ब्रज में इंद्र की पूजा के स्थान पर कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन गोवर्धन पूजा की परम्परा प्रारम्भ कर दी।

गोवर्धन पूजा का महत्व

- कहा जाता है कि भगवान कृष्ण का इंद्र के अहंकार को तोड़ने के पीछे उद्देश्य ब्रज वासियों को गौ धन एवं पर्यावरण के महत्व को बताना था। ताकि व उनकी रक्षा करें। आज भी हमारे जीवन में गौ माता का विशेष महत्व है। और आज भी गौ द्वारा प्राप्त दूध हमारे जीवन में बेहद अहम स्थान रखता है। अगर देखा जाए तो गोवर्धन पर्वत ब्रज में एक छोटे पहाड़ी के रूप में स्थित है। किन्तु इन्हें पर्वतों का राजा भी कहा जाता है। ऐसी संज्ञा गोवर्धन को इसलिए प्राप्त है क्योंकि यह भगवान कृष्ण के समय का एक मात्र स्थाई व स्थिर अवशेष है द्वापर युग के काल की यमुना नदी जहाँ समय समय पर अपनी धारा बदलती रही वही गोवर्धन अपनें मूल स्थान पर ही अवचालित रूप में विद्यमान हैं। अर्थात् गोवर्धन पर्वत को भगवान कृष्ण का स्वरूप भी माना जाता है और इसी रूप में इनकी पूजा भी की जाती है। गर्ग संहिता में गोवर्धन पवर्त के महत्व को दर्शाते हुए कहा गया है गोवर्धन पर्वतों के राजा और हरि के प्रिय है। इसके समान पृथ्वी और स्वर्ग में दूसरा कोई तीर्थ नहीं है।

गोर्वधन पूजा कि तिथि व मूहुर्त 2020

गोवर्धन पूजा 2020

15 नवम्बर 2020

गोवर्धन पूजा पर्व तिथि – रविवार, 15 नवम्बर 2020।

गोवर्धन पूजा सांय काल मुहूर्त - दोपहर बाद 15:17 बजे से सांय 17:24 बजे तक।

प्रतिपदा तिथि प्रारम्भ - 10:36 (15 नवम्बर 2020 से प्रतिपदा तिथि समाप्त - 07:05 बजे (16 नवम्बर 2020 तक)।

गोवर्धन पूजा का अन्नकूट उत्सव :

- गोवर्धन पूजा के मौके पर मंदिरो में अन्न कूट का आयोजन किया जाता है अन्नकूट का मतलब है कि कई प्रकार के अन्न का मिश्रण, जिसे भोग के रूप में भगवान श्री कृष्ण को चढ़ाया जाता है कुछ स्थानों पर विशेष रूप से बाजरे की खिचड़ी बनाई जाती है, साथ ही तेल की पूड़ी आदि बनाने की परंपरा है । अन्न कूट के साथ-साथ दूध से बनी मिठाई और स्वादिष्ट पकवान भोग में चढ़ाए जातें है । पूजन के बाद इन पकवानों को प्रसाद के रूप में श्रद्धालुओं को बाँटा जाता है । कई मंदिरों में अन्न कूट उत्सव के दौरान जगराता किया जाता है और भगवान श्री कृष्ण की अराधना कर उनसे खुशहाल जीवन की कामना की जाती है ।

ज्योतिष में स्वपन का फल

स्वपन और ज्योतिष (Dreams and Astrology)

अगर देखा जाए तो ज्योतिष में चनद्रमा को मनुष्य के मन का कारक माना जाता है, अतः जिस जातक के लग्न में कमजोर ग्रह, दूषित ग्रह या शत्रु ग्रह हो, तो वे जातक निश्चित ही कमजोर माने जाते है। ऐसे लोगो को सपने बहुत अधिक आते है और नजर दोष डर के ज्यादा शिकार होते है । कहा जाता है कि ज्योतिष का भी स्वप्न में अत्याधिक महत्व होता है इसलिए ज्योतिष और स्वप्न काफी हद तक एक दूसरे से जूड़े हुए होते है, इसका कारण यह होता है कि कहीं न कहीं आपके द्वारा देखे गये स्वप्न के माध्यम से कोई भी विद्‌वान ज्योतिषी गणना करके आपको भविष्य के प्रति कुछ न कुछ संकेत या स्वप्न फल तो दे ही सकता है । स्वप्न हमारे मन की उपज होती है और स्वप्न पर किसी का काबू नहीं होता है

स्वप्न और समय (Dream & time)

हम देखते है कि रात्रि में अलग-अलग समय देखे गये स्वप्न का फल भी अलग-अलग ही मिलता है। श्री मत्स्य पुराण के 242 के अध्याय के अनुसारः रात्रि के प्रथम पहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष में मिलता है, दूसरे पहर का छः माह में, तीसरा पहर का तीन माह में चौथा पहर का एक माह में ही मिलता है, और सबसे महत्वपूर्ण बात सूर्यास्त की बेला में देखे गए स्वप्न का फल दस दिनों में ही प्राप्त हो जाता है यदि एक रात्रि में शुभ और अशुभ दोनों सपने देखे गये हो तो शुभ का फल ही प्राप्त होता है ।

<u>सपनो के शुभ अशुभ मतलब :-</u>

आइए हम कुछ स्वप्नों को लेते है उदाहरण के लिए जिनके द्वारा हमे स्वप्नों के शुभ और अशुभ परिणामों का पता चल सकता है ।

- यदि आँखों में काजल लगाते देखे - शारीरिक रूप से तकलीफ होना ।
- स्वप्नमें किसी से लड़ाई करना-खुशी प्राप्त होना ।
- सपने में पलंग पर सोना - अच्छा और गौरव की प्राप्ति को संकेत करता है ।
- सपनों में स्वयं को उड़ते हुए देखना - किसी मुसीबत से आपकों जल्दी छुटकार मिलता है
- स्वप्न में चन्द्रमा को टूटते हुए देखना - कोई समस्या या परेशानी के आने का संकेत देना ।
- चींटी देखना - किसी प्रकार की समस्या में पढ़ना ।
- दाँत टूटते हुए देखना - समस्याओं और परेशानियों में वृद्धि होने का संकेत है ।
- खुला दरवाजा देखना - किसी व्यक्ति से मित्रता या दोस्ती हो सकती है ।
- बंद दरवाजा देखना - बिना वजह धन नाश होने कि सम्भावना है ।

<u>कुछ ऐसे सपनें जो सबकों आते है तथा देते है शुभ-अशुभ संकेत :</u>

- स्वप्न में भूकंप देखना - संतान को कष्ट या तकलीफ हो सकती है ।
- स्वप्न में विदाई समारोह देखना - आपके धन संपदा में वृद्धि होगी ।
- स्वप्न में चश्मा लगाना - आपका ज्ञान बढ़ाना ।
- स्वप्न में दीपक जलाना - नए अवसरो कीप्राप्ति हो ।
- स्वप्न में मांस देखना - कहीं से आकस्मिक धन लाभ होगा ।
- पूजा पाठ करते देखना - आपकी सभी समस्याओं का अंत होना ।
- मैना देखना - उत्त्म स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी ।
- सफेद कबूतर देखना - दुश्मन या शत्रु से मित्रता होना
- बिल्लियों को लड़ते देखना - मित्र से झगड़ा या बड़ी मुसीबत आना ।
- सफेद बिल्ली देखना - धन की हानि का योग ।
- मधुमक्खी देखना - दोस्तों से प्रेम बढ़ाना ।
- खच्चर दिखाई देना - धन सम्बन्धी समस्या का होना ।
- रोता हुआ सियार देखना - किसी दुर्घटना की आंशका ।
- समाधि देखना - सौभाग्य की प्राप्ति । सुख का आगमन होना ।
- गोबर दिखई देना - पशुओं के व्यापार में लाभ होना ।
- चूड़ी दिखाई देना - सौभाग्य में वृद्धि होना ।

<u>सपनों के मतलब :</u>

- सपनों में मुर्दा देखना - किसी बिमारी का ठीक होना ।
- सपनों में जामुन खाना - किसी समस्या से छुटकारा मिलना ।
- सपने में धन उधार देना - बहुत अधिक धन की प्राप्ति होना ।
- सपने में चन्द्रमा देखना - मान-सम्मान मिलने के योग है ।
- चिड़िया को रोते देखना - हर प्रकार की धन-संपत्ति नष्ट होने का योग ।
- दलदल देखना - आपकी चिंताए और बाढ़ सकती है ।
- खेत में पके गेहूँ देखना - धन लाभ होने के योग ।
- फल-फूल खाना - कही से धन लाभ होना ।
- सपने में सोना मिलना - धन हानि हो सकती है ।
- सपने में शरीर का कोई अंग कटा हुआ

किसी परिजन की मृत्यु के योग बनते है।

- कौआ देखना - किसी की मृत्यु का समाचार मिलना।
- धुँआ देखना - व्यापार में हानि होने के योग।
- इस प्रकार अपने देख कि ज्योतिष में सपनो के शुभ और अशुभ फल किस प्रकार से पता चलता है। अतः हम इसको जानकर हमारे जीवन में आने वाले दुर्घटनाओं का पता लगा सकते है।

ज्योतिष में कृतिका नक्षत्र

कृतिका नक्षत्र आकाश मण्डल में तीसरा नक्षत्र है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य व राशि शुक्र है। यह आकाश में अग्निशिखा की तरह दिखाई देता है। कृतिका खुली आँखो से दिखाई देने वाला 6 तारों का एक समूह है, जो आकाश में वृष राशि के समीप दिखाई पड़ता है। कृतिका नक्षत्र डिग्री में (मेष 26°, 40° से वृषभ 10°) तक में होती हैं। कृतिका नक्षत्र को ज्योतिशास्त्र में स्त्री नक्षत्र कहा गया है। कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति पित्त प्रकृति के होते है। तथा अधिक तला तथा गरिष्ठ भोजन इनके स्वास्थ्य को प्रभावित करता है इसलिए इस नक्षत्र वाले जातक कम भोजन करने वाले होते है। यदि किसी जातक का जन्म कृतिका नक्षत्र में हो तो जातक सुन्दर और मनमोहक छवि का होता है इसका स्वामी सूर्य है। अतः बचपन से ही आपको पढ़ने लिखने में अधिक रूचि रहती है। कृतिका नक्षत्र के जातक उच्च शिक्षा प्राप्त कर कई विषयों के ज्ञाता कहलाते है। यह सूर्य का विशेष गुण है। और कृतिका नक्षत्र के जातक विलासता में भी रूचि रखने वाले व्यक्ति होते है। इस नक्षत्र के जातक को धन कमाने की भी अद्भुत योग्यता है और किसी भी लक्ष्य के लिए कड़ा परिश्रम करना आपकी आदत में शुमार है। इस नक्षत्र में जन्मे जातक के प्रेम प्रसंग की बात करें तो आप बड़ी ही आसानी से विपरीत लिंग को आकर्षित कर लेते है। और आपका वैवाहिक जीवन सुखमय होता है। इस नक्षत्र के जातक की स्वास्थ्य संबंधी बात करे तो इनको नाक सम्बन्धी रोग होने की अधिक संभावना रहती है।

शिक्षा और आय

कृतिका नक्षत्र में जन्मे जातको के शिक्षा और व्यवसाय की बात करें तो आप प्रायः अपने जन्म-स्थान पर नही टिकेगें और रोजगार के सिलासिले में परदेश जा सकते है। चिकित्सा, इंजिनियरिंग, दवाइयों से जुड़े क्षेत्र, आभूषण निर्माण सम्बन्धि कार्य, विश्वविद्यालय के उच्च अधिकारी या विभागध्यक्ष, वकील, न्यायधीश, सेना, पुलिस या सुरक्षा बल में नौकरी, ढलाई का काम, सिलाई-कढ़ाई, चीनी मिट्टी या सिरेमिक की वस्तुएँ बनाने वाले तथा वे सभी कार्य जिसमें आग या तेज धार वाले औजारों का प्रयोग होता हो - आप उन्हे करके सफल हो सकते है।

पारिवारिक जीवन

इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक का वैवाहिक जीवन हमेशा सुखी रहेगा। तथा जिस भी जीवनसाथी के साथ इनकी शादी होगी वह सदा गुणगान और घरेलू कार्यो में निपुण होगा। इतना अनुकूल घरेलू वातावरण के बावजूद इनके जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है जिसके कारण आपको अपने जीवन साथी के स्वास्थ्य कि चिन्ता लगी रहेगी। अतः आपका जीवनसाथी पहले से ही आपको जानने वाला या पूर्व परिचित हो सकता है। इस नक्षत्र के जातकों का प्रेम विवाह होने की भी संभावना होती है। आप अपनी माता से इस नक्षत्र वाले जातक विशेष लगाव रखते है। और यह संभव है कि जीवन 50 वर्ष की आयु तक विशेष संघर्षशील रहे, लेकिन उसके उपरान्त 50 वर्ष से 56 वर्ष की उम्र का समय बहुत अच्छा बीतेगा।

स्वास्थ्य

इस नक्षत्र में जन्मे जातक का स्वास्थ्य देखा जाए तो उसकी खुराक अच्छी होगी लेकिन उसकी खाने की अनिश्चित व अनियमित आदत होगी। वह दाँतो की परेशानी, कमजोर नेत्रदृष्टि, क्षय रोग, गैस, बवासीर, दिमागी बुखार, दुर्घटनाए, मलेरिया चोट अथवा दिमागी मैनिजाइटिस से ग्रस्त हो सकता है। अतः उसका स्वास्थ्य कितना ही अच्छा या खराब क्यो न हो न तो वह अपने बिमारियों से घबराएगा और न ही वह अपने स्वास्थ्य पर नियमित ध्यान देगा। के.एम.सिन्हा के स्त्री जातक के अनुसार स्त्री जातक का कार्तिक प्रबल हो उस समय कन्या में उसके यौवनारम्भ अथवा प्रथम ऋतुश्राव के लक्षण दृष्टिगोचर हो तो वह झगडालू, व्याभिचारी, बांझ, गर्भपात कराने वाली आक्षित तथा मृत बच्चे उत्पन्न करने वाली होगी।

कार्तिक नक्षत्र में विभिन्न ग्रहो की स्थिति के परिणाम :

कार्तिक नक्षत्र में स्थित सूर्य पर यदि मंगल की दृष्टि पड़ रही हो तो जातक युद्ध विद्या में प्रवीण होगा तथा अपने साहसिक कार्यो से धन और यश आर्जित करेगा। और यदि सूर्य पर बुद्ध की दृष्टि पड़ रही हो तो वह निपुण संगीतकार होगा, तथा आकर्षक व्यक्तित्व व सुखी जीवन जीने वाला होगा। यदि सूर्य पर बृहस्पति की दृष्टि पड़ रही होतो वह जातक अपने परिवार में सर्वश्रेष्ठ होगा। यदि वह राजनीति में होगा तो मन्त्रीपद पाने का योग है। यदि सूर्य ग्रह पर शुक्र ग्रह की दृष्टि हो तो जातक सुन्दर आँख व शरीर वाला होता है। और यदि सूर्य ग्रह पर शनि की दृष्टि होने पर उस जातक का स्वास्थ्य खराब तथा वह निर्धन होगा तथा परिवार में निरनतर क्लेश से अशांति की स्थिति में रहेगा।

प्रथम भाग (26.40 डिग्री से 30.00 डिग्री)

यदि इस प्रथम भाग में सूर्य किसी शुभ ग्रह से संयुक्त हो तो जातक गरीब तथा अधिक सन्तान वाला होगा। अर्थात् वह ज्योतिष विद्या तथा उससे सम्बन्धित विषयों को सीखनें का इच्छुक होगा। अतः उसकी आँखें भी खराब होंगी तथा वह खाने में पेटू होगा। स्वास्थ्य कि बात करें तो अग्नि दुर्घटना का संकेत है तथा उसे सेना या पुलिस विभाग में रोजगार प्राप्ति के योग है।

द्वितीय भाग (30.00 डिग्री से 33.20 डिग्री)

कृतिका नक्षत्र में यदि सूर्य ग्रह किसी राशि के द्वितीय खण्ड में उपस्थित हो तो दीर्घ जीवन, सन्तान से सुख, संगीत का प्रेमी, मानसिक रूप से दृढ़ पुजारी बनने के भी योग हैं। कम्पाउंडर, नर्स अथवा कुष्ट-रोग में निपुण डाक्टर भी बन सकता है। इनके स्वास्थ्य कि बात करें तों गरदन में दर्द या ग्रन्थी का असाधारण फैलाव जो कैन्सर का कारण बन

तृतीया भाग

(33.20 डिग्री से 36.40 डिग्री)

कृतिका नक्षत्र के तृतीय भाग में सूर्य उपस्थितहो तो वह जीवन पर्यन्त भिखारी होगा वह दर-दर भटकेगा तथा वह बालरिष्ट (बचपन में मृत्यु) का योग है। अतः वह नाई का कार्य करेगा। यदि इस खण्ड में सूर्य पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो स्त्री जातक, अनैतिक कार्यो में लिप्त तथा यौन रोगो से ग्रस्त होगी।

चतुर्थ भाग

(36.40 डिग्री से 40.00डिग्री)

इस नक्षत्र के चतुर्थ भाग में यदि सूर्य उपस्थित हो तो जातक का स्वास्थ्य खराब हो जात है। जीवन में निम्न स्तर का होगा। क्रूर विचारों वाला। अपने परिवार के प्रति उत्तरदायी रहेगा। तथा इनके नक्षत्रों में स्वास्थ्या की बात करें तो इनके से जलीय रोग से पीड़ित होने का योग है।

चन्द्रमा

कार्तिक नक्षत्र में यदि चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि हो तो वह कृषिकार्यो में सफल होगा। तथा मंगल की दृष्टि पड़ने पर वह यौन क्रियाओं में लिप्त रहेगा जिससे बहुत सी समस्याएं उसे घेरे रहेगी। और यदि सूर्य पर बुध ग्रह कि दृष्टि हो तो जातक बुद्धिमान होगा और दया कि मूर्ति होगा जो जरूरतमन्द कि सहायता करेगा। यदि चन्द्रमा कार्तिक नक्षत्र के दूसरे भाग में हो और इस पर शनि की दृष्टि हो तो माता की जल्दी मृत्यु का संकेत मिलता है।

प्रथम भाग

(26.40 डिग्री से 30.00 डिग्री)

इस खण्ड में यदि चन्द्रमा स्थित है तो वह मन्त्रशक्ति अथव भ्रष्टकला प्रदान करती है। नर जातक तथा मादा दोनों एक दूसरे के कारण विपत्तियों का सामना करते है।

द्वितीय भाग

(30.00 डिग्री से 33.20 डिग्री)

यदि कृतिका नक्षत्र के द्वितीय भाग में चन्द्रमा उपस्थित हो तो उसका व्यक्तित्व अति आर्कषक होगा तथा वह विद्वानों की संगति में रहेगा। इस भाग में यदि चन्द्रमा पर शनि की दृष्टि हो तो माता की जल्दी मृत्यु का संकेत है। तथा वह व्यक्ति या जातक रसायन तथा भूमि

तृतीय भाग

(33.20 डिग्री से 36.40 डिग्री)

यदि कृतिका नक्षत्र के तृतीय भाग में चन्द्रमा स्थिति हो तो उस जातक का कद, चुस्त लेकिन निर्धन होगा। यदि इस खण्ड में चन्द्रमा पर राहु और मंगल की दृष्टि हो तो स्त्रियों के 30 वर्ष की आयु में विधवा होने का संकेत है।

चतुर्थ भाग

(36.40 डिग्री से 40.00 डिग्री)

यदि चन्द्रमा कि उपस्थिति, कृतिका नक्षत्र के चतुर्थ भाग में हो तो वह जातक बहुत विद्वान तथा धर्म ग्रन्थो की जानकारी में निपुण होगा तथा वह देखने में डरावना होगा।

मंगल

यदि कार्तिक नक्षत्र में स्थित मंगल पर चन्द्रमा कि दृष्टि हो तो वह जातक अपनी माता का विरोधी होगा। तथा उसकी एक से अधिक पत्निया होगी। और यदि सूर्य कि दृष्टि मंगल पर हो तो उसकी पत्नी लालची प्रवृत्ति की होगी तथा वह उसकी इच्छाओं की सन्तुष्टि कभी नही कर सकेगा। यदि बुद्ध की दृष्टि हो तो वह अपना अधिकतर समय धार्मिक कार्यो में तथा ललित कला में बितायेगा तथा वह कम बोलने वाला होगा। और यदि बृहस्पति की दृष्टि होने पर वह अपने परिजनों से स्नेह करने वाला होगा तथा संगीत कला में निपुण होगा तथा ऐसे व्यक्ति का 30 वर्ष की आयु के बाद धनी होने का संकेत है। यदि शुक्र कि दृष्टि हो तो वह सेनाध्यक्ष अथवा आर्डनैन्स फैक्टरी का प्रबन्धक होगा। और यदि शनि की दृष्टि मंगल पर हो तो जातक सम्पत्ति और अच्छे स्वास्थ्य का मालिक होगा और दूसरो से सम्मानित होगा

प्रथम भाग :

(40.00 डिग्री से 43.20 डिग्री)

वाघ संगीत में रूचि, मृदुभाषी। जहाजरानी उद्योग से सम्बन्धित होगा। गिल्टियों अथवा कर्णमूल की व्याधियों से पीड़ित होगा।

द्वितीय भाग

(43.20 डिग्री से 46.40 डिग्री)

यदि इस भाग में जातक कि राशि में सूर्य भी स्थित हो तो जातक सेना या पुलिस विभाग में नौकरी करेगा अथवा वह इन विभागों से सम्बन्धित सम्पर्क कार्य से लगा होगा।

तृतीय भाग

(46.40 डिग्री से 50.00 डिग्री)

यदि जन्म लग्न अश्विनी से है तथा मंगल इस खण्ड में स्थित हो तो संतान की मृत्यु पत्नी से दुख प्राप्त होने की परिणति। स्वास्थ्य कि बात करें तो गर्दन में गाठिया अथवा फैरेनजायट्ज रोग का संकेत।

चतुर्थ भाग

(50.00 डिग्री से 53.20डिग्री)

धनी, शराबी तथा स्त्री संगत का शैकीन। चंचल-चित वाला तस्करी तथा मादक पदार्थो जैसे अनैतिक कार्यो से धन कमायेगा।

बुध

आदि कृतिका नक्षत्र में जन्में जातक पर बुध पर अगर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो वह जातक मेहनती, धनी तथा शासक वर्ग की निकटता में होगा। अगर बुध पर बृहस्पतिकी दृष्टि हो तो नगर या विभाग का अघ्यक्ष, बुद्धिमान या धनवान होगा। यदि शुक्र की दृष्टि होने पर वह जातक अच्छे पहनावे तथा तड़क-भड़क में विश्वासी होगा, और यदि बुध पर शनि की दृष्टि हो तो पत्नी सन्तान तथा दूसरों द्वारा दुर्व्यवहार के कारण पागलपन की स्थिति तथा लोगो का उसको दुतकारा जाना।

प्रथम भाग

(40.00 डिग्री से 43.20डिग्री)

व्यवहार, चतुर,त्र मृदुभाषी। अच्छे कार्यो द्वारा धनार्जन। सुलझे विचारों वाली पत्नी होगी। तथा हकलाहट या बोलने में परेशानी होगी।

द्वितीय भाग

(43.20 डिग्री से 46.40डिग्री)

इस नक्षत्र तथा इस भाग वाले जातक वेद शास्त्रों के ज्ञाता, धनी और यशस्वी होते है। अतः उसे अग्नि तथा बारूदी शास्त्रों से बचना चाहिए तथा वह कई स्त्रियों से काम-सम्बन्ध रखेगा।

तृतीय भाग

(46.40 डिग्री से 53.20डिग्री)

इस भाग का व्यक्ति दृढ़ स्वभाव का तथा अति कामवासना में संलग्न रहेगा। उसके पिता को शासन से दण्ड प्राप्त होगा। भाइयों से निराशा मिलेगी स्वास्थ्य कि बात करें तो मूत्र रोग होने का संकेत है।

चतुर्थ भाग (50.00 डिग्री से 53.20डिग्री)

दूर के रिश्तेदार द्वारा लाभ प्राप्त होगा। एक बहन का पालन पोषण उसके उपर होगा। और यदि किसी कारणवश इसमे शनि की उपस्थिति है तो जातक दंत रोग तथा पैराथाइरॉड के असन्तुलन से प्रभावित होगा

बृहस्पति

रोहिणी नक्षत्र में स्थित बृहस्पति पर सूर्य की दृष्टि हो तो वह युद्ध विद्या में प्रवीण होगा उसे सरकार से मान्यता (पदक) प्राप्त होंगे । तथा वह युद्ध में लड़ते हुए घायल होगा। चन्द्रमा कि दृष्टि होने पर वह सत्यभाषी, भाग्यशाली, सम्मानित तथा जरूरतमन्दों कि सहायता करने वाला होगा। मंगल की दृष्टि होगी तो अच्छी पत्नी व संतान होगी। बुध की दृष्टि होगी तो राजनीतिक क्षेत्र में प्रभावी होगा। शुक्र की दृष्टि हो तो वह भाग्यशाली धनवान व गरीबों का सहायक होगा। शनि की दृष्टि हो तो, जातक धन सम्पत्ति, यश प्राप्त करेगा।

प्रथम भाग

(40.00 डिग्री से 43.20 डिग्री)

यह अंश बृहस्पति के स्थान के लिए अत्युत्तम है जिसमें वह अपना भरपूर खुशियों के साथ बितायेगा , धन-ऐश्वर्य, सन्तान, यश, मान मिलेगा।

द्वितीय भाग

(43.20 डिग्री से 46.40 डिग्री)

धर्म की ओर अग्रसर रहेंगे। गला या आंतो की बिमारी, हल्का, दमा, खांसी तथा जुकाम हो सकते है। एक से अधिक पत्नियों के संकेत है।

तृतीय भाग

(46.40 डिग्री से 50.00 डिग्री)

नक्षत्र के इस भाग में व्यक्ति विवहेतर यौन सम्बन्धों, दास-दासियों तक से काम-सम्बन्धों में लिप्त। यदि इस भाग में चन्द्रमा स्थित न हो तो 55 वर्ष की आयु अन्यथा और लम्बी उसके गला अथवा यौनरोग से पीड़ित होने का योग।

चतुर्थ भाग

(50:00 डिग्री से 53:20 डिग्री)

व्यापक यात्राए, विदेशो में कारोबार। 40 वर्ष की आयु में यात्रा के समय दुर्घटना का सकेत। उसे इस वर्ष यात्रा के समय सावधानी बरतनी चाहिए।

शुक्र

रोहिणी नक्षत्र में स्थित शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक स्त्रियों के कारण भूमि, सम्पत्ति इत्यादि प्राप्त करेगा। यदि चन्द्रमा कि दृष्टि हो तो कामवासना ग्रस्त, लेकिन मृदुभाषी तथा परिवार में अमूल्य। मंगल की दृष्टि होने पर क्रूर, सुखो से हीन तथा अनैतिक, कार्यो द्वारा ान कमायेगा। यदि बुध की दृष्टि हो तो सुन्दर व्यक्तित्व, चुपचुपा स्वभाव। बृहस्पति की दृष्टि हाने पर प्रसन्न वैवाहिक, जीवन, संतान, भवन आदि से भरपूर सुखी जीवन। शनि की दृष्टि हो तो स्वास्थ्य की समस्या, आत्म सम्मान नष्ट होगा तथा निर्धन होगा।

प्रथम भाग

(40:00 डिग्री से 43:20 डिग्री)

35 वर्ष की आयु तक उसका तथा उसका पारिवारिक जीवन सौहार्दपूर्ण नहीं होगा। तथा 35 वर्ष की अवस्था के बाद उसका जीवन भी बहुत अच्छा होगा।

द्वितीय भाग

(43:20 डिग्री से 46:40 डिग्री)

नक्षत्र के इस भाग का जातक ललित कलाओं, ड्रामा अथवा संगीत वाधों में रूचि लेगा। गरदन में फोड़ा या गिल्टी का रोग रहेगा। तथा वह सद्भाव पूर्ण विवाहित जीवन बितायेगा।

तृतीय भाग

(46:40 डिग्री से 50:00 डिग्री)

इस जातक के अन्य स्त्रियों से अधिक काम-सम्बन्ध होंगे जिसमें से एक या 2 उसे ब्लैकमेल करके धन भी ऐठेंगी। उसे 35-36 वर्ष वर्ष की अवस्था में इस तरह के सम्बन्धों से बचना चाहिए क्योंकि जातक के इसी आयु में कामवासना द्वारा शोषण की त्रीवता का संकेत है।

चतुर्थ भाग

(50:00 डिग्री से 53:20 डिग्री)

इस नक्षत्र के चतुर्थ भाग वाले जातक छोटा कद, स्थूल शरीर होगा वह अति सुन्दर स्त्री से विवाह करेगा। इस अंश में शुक्र की स्थिति होने पर स्त्रियों के पति बहुत धनवान तथा समाज में प्रभावी व्यक्ति होंगे।

शनि

रोहिणी नक्षत्र में स्थित में शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक गरीब तथा दूसरे के दिए गए धन-भोजन पर आश्रित होगा। यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो वह सरकार से सम्मान प्राप्त करेगा तथा धनी और शक्तिशाली होगा। यदि मंगल की दृष्टि हो तो वाचाल तथा सदैव मुस्करानें वाला होगा। वह धनी होगा। बुध की दृष्टि होने पर वह पश्ढ समान कामुक होगा तथा दुष्ट लोगो की संगति में रहेगा। यदि में रहेगा। यदि बृहस्पति की दृष्टि हो तो दूसरो की सेवा करने का सदैव, इच्छुक होगा। शुक्र की दृष्टि होने पर वह सोने-जवाहरात का कारोबार करेगा तथा अच्छा लाभ अर्जित करेगा। वह शराबी तथा कामुक प्रवृत्ति का होगा।

प्रथम भाग

(40:00 डिग्री से 43:20 डिग्री)

ऐसे जातक आरम्भ में काफी धन गावांयेगा लेकिन बाद में 45 वर्ष की आयु के बाद आर्जित करेगा। गले के कैंसर का संकेत है इसलिए उसे गले की तरफ से सावधानी बरतनी चाहिए।

द्वितीय भाग

(43:20 डिग्री से 46:40 डिग्री)

द्वितीय भाग वाले व्यक्ति मवेशियो से आय। सुन्दर शरीर, खुशमिजाज, तथा बुद्धिमान। गले आँख की समस्याएँ तथा नकसीर, कब्ज के कारण पेट का आपरेशन अथवा गंजेपन का रोग।

तृतीय भाग

(46:40 डिग्री से 50.00 डिग्री)

शनि की स्थिति का अच्छा स्थान। वह धार्मिक ग्रन्थो पर शोध कार्य करेगा, दूसरों से धन सम्पत्ति अर्जित करेगा, मृदुभाषी तथा अत्यन्त बुद्धिमान उसे गले तथा दाँत के रोग हो सकते है।

चतुर्थ भाग

(50.00 डिग्री से 53.20 डिग्री)

सुन्दर शरीर, खुशामिजाज तथा बुद्धिमान लेकिन किसी कार्य या क्षेत्र में स्थिर चित नहीं होगा। कुछ मामलों में पाया गया है कि वह राजनीति में अच्छे स्थान पर स्थापित होते है।

राहु

प्रथम भाग

(40.00 डिग्री से 43.20 डिग्री)

ऐसे जातक गैस और अपच की शिकायत। आँख के रोग से पीड़ित। यदि इस भाग में लग्न भी पड़े तो जातक दुष्ट बाधाओं से बचा रहेगा। उसकी लम्बी आयु होगी।

द्वितीय भाग

(43.20 डिग्री से 46.40 डिग्री)

राहु की सर्वश्रेष्ठ स्थिति वह 50 वर्ष की अवस्था तक अच्छा धन कमायेगा फिर भी अपनी मृत्यु के समय वह कंगाल होगा। वह उत्पत्ति सम्बन्धि अव्यवस्था होगी।

तृतीय भाग

(46.40 डिग्री से 50.00 डिग्री)

वह अपनी दैनिक आवश्यकताओं के लिए दूसरों पर निर्भर होगा। 65 वर्ष तक की वायु जलीय बिमारियों से मृत्यु का योग। अधिमूत्र की व्याधि।

चतुर्थ भाग

(50.00 डिग्री से 53.20 डिग्री)

जातक को यात्राओं से सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि उसके साथ दुर्घटना का योग है। अच्छी शिक्षा न होने पर भी प्रसिद्ध कवि बनेगा।

केतु

प्रथम भाग

(40.00 डिग्री से 43.20 डिग्री)

वह अपने जन्म स्थान से दूर रहने का प्रयास करेगा। देखा गया है कि जातक की निर्धनता के कारण 30 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो जाती है।

द्वितीय भाग

(43.20 डिग्री से 46.40 डिग्री)

लम्बी आयु होने में सन्देह है। यदि बृहस्पति की शुभ दृष्टि हो तो 21 वर्ष तक की आयु होगी। बचपन से ही दृष्टिदोष का संकेत।

तृतीय भाग

(46.40 डिग्री से 50.00 डिग्री)

शिक्षक बनने का योग है। बड़ा परिवार होगा। 30 वर्ष की आयु तक विरासत में मिली सम्पति से अच्छा जीवन। तदुपरान्त पत्नी के कारण सारा धन गँवा देगा। उसे गले या मुख का

चतुर्थ भाग

(50.00 डिग्री से 53.20 डिग्री)

वेद शास्त्रों में निपुण वाद-विवाद में प्रवीण। तन्त्र और मन्त्र पर पंडित्य होगा। कुछ मामलों में अच्छे आयुर्वेदिक चिकित्सक पाये गये है। फिर भी वह अन्धापन, मोतियाबिन्द तथा उच्चारण दोष से पीड़ित होगा।

विभिन्न ग्रहो के घात को कम करने के लिए निम्न उपाय अपनाने चाहिए जो निम्न है।

1. नित्य ग्यारह बार महामन्त्र "ओंम नमो: शिवाय:" का जाप करना चाहिए।

2. 4 या 6 रत्ती का मोती चाँदी की अँगूठी में जड़वाकर शुक्लपक्ष से सोमवार के दिन प्रात: 6 से 7 बजे अथवा सायं 7 और 10 बजे के बीच चौथी (बुध) अंगुली में धारण करें तथा नीलम 3 रत्ती का सोने अथवा पंचधातु की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार को सांय 1:30 से 4:30 के मध्य दूसरी (शनि) अंगुली में धारण करें।

3. नित्य सूर्य मन्त्र का जाप करें। ग्रहों के दुष्प्रभाव को हटाने के लिए गायत्री मन्त्र का भी जाप करना चाहिए।

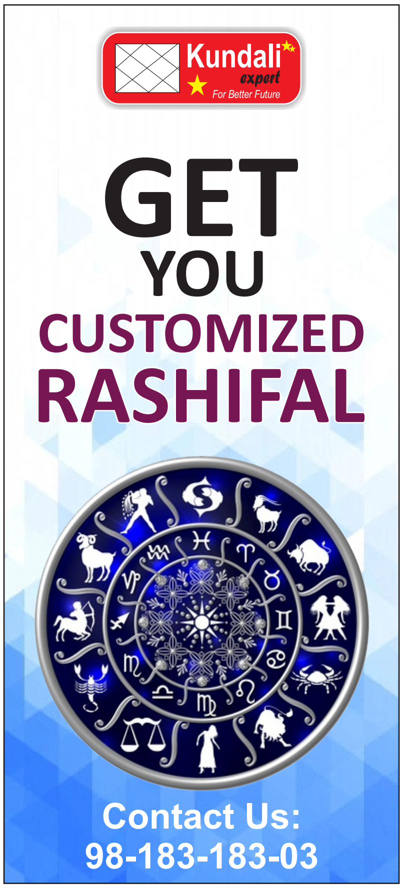

गोरखनाथ मंदिर

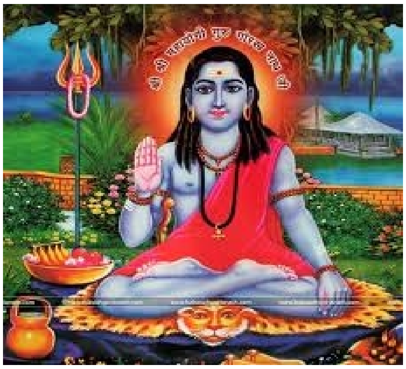

गोरखनाथ मंदिर, जो है वह उत्तर प्रदेश के गोरखपुर नगर में स्थित है। इसी कारण से बाबा गोरखनाथ के नाम पर इस जिले का नाम गोरखपुर पड़ा है। अत: गोरखनाथ मंदिर के वर्तमान महन्त श्री बाबा योगी आदित्यनाथ जी है यहाँ कि एक विशेषता यह भी है कि मकर संक्रान्ति के अवसर पर यहाँ एक माह चलने वाला विशाल मेला लगता है जो कि "खिचड़ी का मेला" के नाम से गोरखपुर में प्रसिद्ध है। तो आइए हम इसके बारे में कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों को जानते है।

देखा जाए तो हिन्दू धर्म, दर्शन, अध्यात्म और साधना के अन्तर्गत विभिन्न तरह के सम्प्रदायों में नाथ सम्प्रदाय का प्रमुख स्थान है और आपको यह बात पता होगी कि पूरे देश में फैले हुए नाथ सम्प्रदाय के विभिन्न मंदिरों तथा मठों कि देख-रेख यही से होती है। अत: नाथ सम्प्रदाय की मान्यता के अनुसार सच्चिदानन्द शिव के साक्षात स्वरूप "श्री गोरक्षनाथ्ज्ञ जी" सतयुग में पेशावर (पंजाब) में त्रेतायुग में

गोरखपुर, उत्तरप्रदेश, तथा द्वापरयुग में महमुज, द्वरिका के पास तथा कलियुग में गोरखधमी, सौराष्ट्र में भविर्भूत हुए थे ।

गोरखनाथ मंदिर का निर्माण

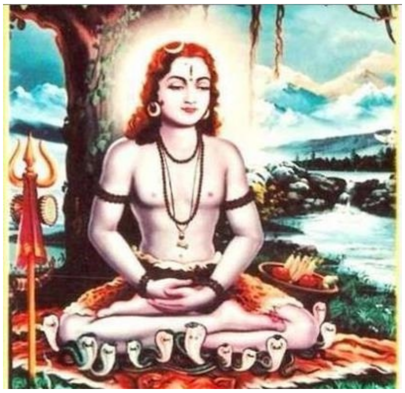

गोरखनाथ मंदिर गोरखपुर शहर में बहुत ही प्रसिद्ध है इसका निर्माण गोरखनाथ में कैसें हुआ इसकों थोड़ा समझतें है आपकों यह बात पता होगी कि गोरखनाथ मंदिर गोरखपुर में अनवरत योग साधना का क्रम प्राचीन काल से चलता आ रहा है । ज्वालादेवी के स्थान से परिभ्रमण करते हुए गोरक्षनाथ जी ने दिव्य समाधि लगाई थी जहाँ वर्तमान में (श्री गोरखनाथ मंदिर) स्थित है । अतः नाथ योगी सम्प्रदाय के महान प्रवर्तक ने अपनी अलौकिक अध्यात्मिक गारिमा से इस स्थान को पवित्र किया था, अत : योगेश्वर गोरखनाथ के पुण्य स्थल के कारण इस स्थान का नाम गोरखपुर पड़ा । अर्थात् आज हम जिस विशाल और भव्य मंदिर का दर्शन कर हर्ष और शांति का अनुभव करते है यह जो कुछ भी आज है वह ब्रम्हलीन महंत श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज जी की ही कृपा से है । और वर्तमान में देखा जाए तो वर्तमान पीठाधीश्वर महंत अवैद्यनाथ जी महाराज के संरक्षण में श्री गोरखनाथ मंदिर विशाल तथा पवित्र रमणीयता को प्राप्त हो रहा है । और हमारा गोरखनाथ का पुराना मंदिर नव निर्माण की विशालता और व्यापकता में समाहित हो गया है ।

गोरखनाथ का जन्म

गोरखनाथ के जन्म के विषय में अगर बात करें तो इनके जन्म को लेकर बहुत से विद्वानों में मतभेद है । वहीं राहुल सांकृत्यायन इनका जन्मकाल 845 ई. की तथा 13वी सदी मानते है । गुरू गोरखनाथ के जन्म के विषय में एक कथा विशेष रूप से प्रचलित है आइए इसको देखते है । एक बार की बात है एक बार भिक्षा लेने के क्रम में गुरू मत्स्येन्द्रनाथ किसी गांव में गए । किसी एक घर में भिक्षा लेने के लिए आवाज लगाने पर गृह स्वामिनी ने भिक्षा देकर आशीर्वाद स्वरूप पुत्र की याचना की । और गुरू मत्स्येन्द्रनाथ एक सिद्ध गुरू तो थे ही । अतः जब गृहस्वामिनी की पुत्र की याचना स्वीकार करते हुए गुरू मत्स्येन्द्रनाथ ने उन्हे एक चुटकी भर भभूत देते हुए कहा कि इसका सेवन करने के बाद यथासम्भव माता बनेंगी और उनके एक महा तेजस्वी पुत्र होगा । जिसकी ख्याति चारो ओर फैलेगी । यह आशीर्वाद देते हुए गुरू मत्स्येन्द्रनाथ अपने भ्रमण क्रम में आगे बढ़ गए । ऐसा ही करते-करते 12 वर्ष बीत गये । अतः बारह वर्ष बीतने के बाद गुरू मत्येन्द्रनाथ उसी गांव में पुनः आए । कुछ भी नही बदला थ । और जिस गृह स्वामिनी को गुरू ने अपनी पिछली यात्रा में आशीर्वाद दिया था, उसके घर के पास आने पर गुरू को बालक का स्मरण हुआ और उन्होने उसके घर में आवाज लगाई । वही गृहस्वामिनी पुनः गुरू को भिक्षा देने के लिए प्रस्तुत हुई तो गुरू ने उससे बालक के विषय में पूछा । गृहस्वामिनी कुछ देर तक चुप थी, परन्तु सच बताने के अलावा कोई उपाय उसके पास न था । अतः वह थोड़ा घबराते हुए तथा संकोच करते हुए उसने सारी बात गुरू को बतायी, उसने कहा गुरू आपसे भभूत लेने के बाद पास-पड़ोस कि स्त्रियों ने राह चलते हुए ऐसे किसी साधु पर विश्वास करने के लिए खूब खिल्ली उड़ाई । तथा उनकी बातों में आकर मैने वह भभूत को पास के गोबर से भरे गड्डे में फेंक दिया था । यह सुनकर गुरू मत्स्येन्द्रनाथ जो कि एक सिद्ध महात्मा थे, उन्होने अपने बालक को पुकारा उनके बुलाने पर एक 12 वर्ष का तीखे नाक नक्श, उच्च ललाट एवं आकर्षण की प्रतिमूर्ति स्वस्थ बच्चा गुरू के सामने आ खड़ा हुआ । और गुरू मत्स्येन्द्रनाथ बच्चे को लेकर चले गए ।और यही बच्चा आगे चलकर गुरू गोरखनाथ के नाम से प्रसिद्ध हो गया । गोरखनाथ के गुरू मत्स्येन्द्रनाथ (मछंदरनाथ) थे । "नाथ सम्प्रदाय में आदिनाथ और दत्तात्रेय के बाद सबसे महत्वपूर्ण नाम आचार्य मत्स्येन्द्र नाथ का है, जो मीननाथ और मछन्दरनाथ के नाम से लोकप्रिय हुए । कौल ज्ञान निर्णय के अनुसार मत्स्येन्द्रनाथ ही कौलमार्ग के प्रथम प्रवर्तक थे । कुल का अर्थ है शक्ति और अकुल का अर्थ शिव है । अतः मत्स्येन्द्रनाथ के गुरू दत्तात्रेय थे ।

महायोगी गोरखनाथ

महायोगी गोरखनाथ के विषय में यह मान्यता है कि जितने भी देवी-देवताओं के साबर मंत्र है उन सभी के जन्मदाता श्री गोरखनाथ ही है । कहा जाता है कि नाथ और दसनामी संप्रदाय के लोग जब आपस में मिलते है तो मिलते वक्त कहते है आदेश और नमों नारायण । अतः नवनाथ की परम्परा की शुरूआत गुरू गोरखनाथ के कारण ही शुरू हुई थी । शंकरचार्य के बाद गुरू गोरखनाथ को भार का सबसे बड़ा संत माना जाता है गोरखनाथ की परम्पारा में ही आगे चलकर कबीर, गजानन महाराज, रामदेवरा तेजाजी महाराज, शिरड़ी के साई आदि संत हुए । अतः माता ज्वालादेवी के स्थान पर तपस्या करके उन्होने माता को प्रसन्न किया था। गोरखनाथ शरीर और मन के साथ नए-नए प्रयोग करते थे । अतः देखा जाए तो उन्होने योग के कई आसनों को विकसित किया और जनश्रुति के अनुसार उन्होने कई तरह-तरह के कठिन (आड़े-तिरछे) आसनों का अविष्कार भी किया गोरखनाथ का यह मानना था कि सिद्धियों के पार जाकर शून्य समाधि मे स्थित होना ही योगी का परम् लक्ष्य होना चाहिए ।

छठ पूजा

नवरात्रि और दीपावली के तरह ही छठ पूजा भी हिन्दूओं का एक विशेष त्यौहार है यह त्यौहार दीपावली के 6 दिन बाद मनाया जाता है और क्षेत्रीय स्तर पर यदि हम देखे तो बिहार में इस पर्व को लेकर एक अलग ही उत्साह देखने को मिलता है अतः दीपावली के बाद से ही लोग छठ पूजा की तैयारियों में लग जाते है। छठ पूजा मुख्य रूप से सूर्यदेव की उपासना का पर्व है लोग बड़े ही श्रद्धा से सूर्यदेव की अराधना करते है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार कहा जाता है कि छठ माता को सूर्य देव की बहन माना जाता है। और सबसे बड़ी मान्यता और आस्था यह है कि सूर्योवासना करने से छठ माता प्रसन्न होती है, जो कोई भी छठ माता की श्रद्धापूर्वक पूजा करता है तथा सच्चे मन से मनोकामनाएं माँगता है छठ माता उसके घर परिवार में हमेशा सुख शांति बनाये रखती है व उनको धन धान्य से सम्पन्न कर देती है।

कब मनाया जाता है छठ पूजा का पर्व :

छठ माता का पर्व जो कि पूरे श्रद्धा और आस्था से मनाया जाता है यह पर्व हर वर्ष पूरे श्रद्धा से मनाया जाता है और याद रहे सूर्य देव की अराधना का यह पर्व साल में दो बार मनाया जाता है। इसमें से एक छठ का पर्व चैत्र शुक्ल षष्ठी व दूसरा कार्तिक शुक्ल षष्ठी इन दो तिथियों को यह पर्व मनाया जाता है। हालांकि कार्तिक शुक्ल षष्ठी को मनाया जाने वाला यह पर्व मुख्य माना जाता है। कार्तिक छठ पूजा का एक अलगही विशेष महत्व माना जाता है। और चार दिनों तक चलनें वाले इस पर्व को छठ पूजा,डाला छठ, छठ माई, छठ, छठ माई पूजा, सूर्य षष्ठी पूजा आदि कई नामों से जाना जाता है।

क्यों करतें है छठ पूजा ?

अगर यह पूछा जाए की छठ पूजा क्यों करते है तो छठ पूजा करने या उपवास रखने, या मन्नत माँगने के सबके अपने-अपने कारण होते है। लेकिन माना यह जाता है कि छठ पूजा सूर्यदेव की उपासना कर उनकी कृपा पाने के लिए विशेष रूप से किया जाता है। सूर्यदेव की कृपा जिनके भी ऊपर पड़ती है उनकी सेहत भगवान की कृपा से हमेश अच्छी बनी रहती है। और सूर्य देव की कृपा से घर में धन धान्य के भंडार भरे रहते है लोगो की श्रद्धा और माता के प्रति विश्वास के अनुसार यह माना जाता है कि छठ माता संतान प्रदान करती है और सूर्य सी श्रेष्ठ संतान के लिए भी यह उपवास रखा जाता है। और सभी लोग अपनी-अपनी अलग तरह की मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए भी इस व्रत को रखा जाता है।

छठ पूजा से जुड़ी पौराणिक कथा :

छठ पर्व पर छठी माता की पूजा की जाती है इससे जुड़ी हुई एक कथा भी प्रचलित है जिसका उल्लेख ब्रम्हवैवर्त पुराण में भी मिलता है इसकी एक कथा के अनुसार प्रथम मनु स्वयम्भुव के पुत्र राजा प्रियव्रत को कोई संतान नही थी। इस वहज से वे दुःखी रहते थे। महर्षि कश्यप ने राजा से पुत्र प्राप्ति के लिए यक्ष करने को कहा महर्षि की आज्ञा के अनुसार राजा ने यज्ञ कराया। इसके बाद महारानी मालिनी ने एक पुत्र को जन्म दिया लेकिनदुर्भाग्य से वह शिशु मृत पैदा हुआ। इस बात से राजा और परिजन बेहद दुःखी थे। तभी आकाश से एक विमान उतरा जिसमें माता षष्ठी विराजमान थी। जब राजा ने उनसे प्रार्थना कि, तब उन्होने अपना परिचय देते हुए कहा कि मै ब्रम्हा की मानस पुत्री षष्ठी देवी हूँ। मै विश्व के सभी बालकों की रक्षा करती हूं और निःसंतानों को जिसके पास संतान नही है उन्हें संतान प्राप्ति का वरदान देती हूं। इसके बाद देवी ने मृत शिशु को आशीष देते हुए हाथ लगाया हात लगाते ही वह जीवित हो गया। देवी की इस कृपा से राजा बहुत प्रसन्न हुए और उन्होने षष्ठी देवी की अराधना की। ऐसी मान्यता है कि इसके बाद ही धीरे-धीरे हर ओर इस पूजा का प्रसार हो गया।

कौन है देवी षष्ठी और कैसे हुई उत्पत्ति :

छठ माता को सूर्य देव की बहन बताया जाता है। लेकिन छठ व्रत कथा के अनुसार छठ देवी ईश्वर की पुत्री देवसेना बताई गई है। देवसेना अपने परिचय में कहती है कि वह प्रकृति की मूल प्रवृति के छठवें अंश से उत्पन्न हुई है यही कारण है कि मुझे षष्ठी कहा जाता है। देवी कहती है यदि आप संतान प्राप्ति की कामना करते है तो मेरी विधिवत पूजा करें। और यह पूजा कार्तिक शुक्ल षष्ठी को करने का विधान बताया गया है। महाभारत काल में कुंती द्वारा विवाह से पूर्व सूर्योवासना करने से पुत्र की प्राप्ति से भी इसे जोड़ा जाता है। सूर्यदेव के अनुष्ठान से उत्पन्न कर्ण जिन्हे अविवाहित कुंती ने जन्म देने के बाद नदी में प्रवाहित कर दिया था वह भी सूर्यदेव के उपासक थे। वे घंटो जल मे रहकर सूर्य की पूजा करतें। मान्यता है कि कर्ण पर सूर्य की असीम कृपा हमेशा बनी रही। इसीलिए लोग सूर्यदेव की कृपा पाने के लिए भी कार्तिक शुक्ल षष्ठी को सूर्य देव की उपासना करते है।

छठ पूजा के चार दिन :

छठ पूजा का पर्व चार दिनों तक चलता है :

छठ पूजा का पहला दिन नहाय खाय :

छठ पूजा का त्यौहार भले ही कार्तिक शुक्ल षष्ठी को मनाया जाता है लेकिन इसकी शुरूआत कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को नहाय खाय के साथ होती है। और मान्यता यह है कि इस दिन व्रती स्नान आदि कर नये वस्त्र धारण करते है और शाकाहारी भोजन लेते है। इस व्रती भोजन के बाद ही घर के बाकि सदस्य भोजन ग्रहण करते है।

छठ पूजा का दूसरा दिन खरना :

कार्तिक शुक्ल पंचमी को पूरे दिन व्रत रखा जाता है व शाम को व्रती भोजन ग्रहण करते है। इसे खरना कहा जाता है। इस दिन अन्न व जल ग्रहण किये बिना उपवास रखा जाता है शाम को चावल व गुड़ से खीर बनाकर खाया जाता है। इस व्रत में बहुत ही शुद्ध रूप से कार्य किया जाता है नमक और चीनी का इस्तेमाल नही किया जाता है। चावल का पिठ्ठा व घी लगी हुई रोटी भी प्रसाद के रूप में वितरीत की जाती है।

षष्ठी के दिन छठ पूजा का प्रसाद बनाया जाता है इस प्रसाद में सबसे महत्वपूर्ण प्रसाद ठेकुआ होता है और कुछ स्थानों पर इसे टिकरी भी कहा जाता है। चावल के लड्डू भी बनाये जाते है। बहुत सारे प्रसाद व फल लेकर बाँस की टोकरी में सजाये जाते है। टोकरी की पूजा कर सभी व्रती स्त्रियाँ सूर्य को अर्ध्य देने के लिए तालाब नदी या घाट आदि पर जाते है। स्नान करके डूबते हुए सूर्य की अराधना की जाती है।

अगले दिन यानि सप्तमी को सुबह सूर्योदय के समय भी सूर्यास्त वाली उपासना की प्रक्रिया को दोहराया जाता है। सुबह भी सूर्य देवता को अर्ध्य देने के बाद, वही स्थिति सभी स्त्रियों और बच्चों को प्रसाद बाँटा जाता है इस तरह से छठ माता की विधिवत पूजा करनें के बाद छठ पूजा को पूर्ण रूप से सम्पन्न किया जाता है।

छठ पर सूर्य देव और छठी मैया की पूजा का विधान :

छठ पूजा में सूर्य देव की पूजा की जाती है और उन्हे अर्ध्य दिया जाता है सूर्य देवता प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देने वाले देवता है जो पृथ्वी पर सभी प्राणियों के जीवन का आधार है। सूर्य देव के साथ-साथ छठ पर छठी मैया की पूजा का भी विधान है पौराणिक मान्यता के अनुसार छठी माता या षष्ठी माता संतानों की रक्षा करती है और उन्हे दीर्घायु प्रदान करती है। शास्त्रों में में षष्ठी देवी को ब्रहमा जी की मानस पुत्री भी कहा गया है पुराणों में इन्हें मां कात्यायनी भी कहा गया है, जिनकी पूजा नवरात्रि में षष्ठी तिथि पर होती है। षष्ठी देवी को ही बिहार-झारखंड में स्थानीय भाषा में छठ मैया कहा जाता है।

छठ पूजा पर्व तिथि व मुहूर्त 2020

छठ पूजा
20 नवम्बर
छठ पूजा के दिन सूर्योदय - 06:48
छठ पूजा के दिन सूर्यास्त - 17:26
षष्ठी तिथि आरंभ - 21:58 (19 नवम्बर 2020)
षष्ठी तिथि समाप्त : 21:29 (20 नवम्बर 2020)

थावे माता की महिमा

थावें विशेष रूप से बिहार के गोपालगंज जिले का एक मध्यम आकार का एक गाँव है अतः यही पर देवी दुर्गा माता का एक प्रसिद्ध मंदिर है इसकी दूरी गोपालगंज से 6 किमी. दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। थावे नामक मंदिर बिहार राज्य के गोपालगंज जिले में थावे नामक स्थान पर स्थित हथुवा राजा द्वारा बनवाया गया एक दुर्गा मन्दिर है। इसकी एक मुख्य विशेषता यह भी है कि यहाँ चैत्र महीने में विशाल मेला लगता है। और मंदिर के पास ही देखने योग्य एक विशाल पेड़ है। गोपालगंज का यह सुप्रसिद्ध थावे मन्दिर दो तरफ से जंगलों से घिरा हुआ है और इस मंदिर का गर्भग्रह काफी पुराना है। वैसे तो यहाँ सालों भर भक्तों की कतार लगी रहती है परन्तु चैत्र और शारदीय नवरात्र में यहाँ अर्चना करने का विशेष महत्व है। इसके अलावा माता के मंदिर में सोमवार और शुक्रवार को विशेष रूप से पूजा की जाती है इस मंदिर के लोग थावे वाली माता के मंदिर को सिंहासिनी भवानी मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। और माता के मंदिर में नवरात्रि में पशुबलि देने की भी परम्परा है यहाँ भक्त माँ के दरबार में खाली हाथ आते है। और देवी माता की सच्चे मन से पूजा-अर्चना करके माता की अराधना करते है। माँ के आर्शीर्वाद से सच्चे मन से पूजा करने वाले लोगो की सारी मनोकामनाएं पूरी हो जाती है।

थावे दुर्गा मंदिर कथा

आइए हम थावे माता के मंदिर के बारे में जानते है थावे दुर्गा मंदिर की स्थापना की कहानी काफी रोचक है बात ऐसी है की चेरों वंश के जो राजा थे जिसका नाम राजा मनन सिंह था वह खुद को माँ दुर्गा का बड़ा भक्त मानते थे, तभी अचानक उस राजा के राज्य में अकाल पड़ गया, उसी दौरान थावे में ही माता रानी का एक भक्त रहषु था। रहषु के द्वारा पटेर को बाध से दौनी करने पर चावल निकलने लगा। और यही मुख्य वजह थी की वहाँ के लोगो को खाने के लिए अनाज मिलने लगा यह बात राजा तक पहुँची लेकिन राजा को इस बात पर विश्वास नही हो रहा था और इस कारण राजा रहषु के विरोध में हो गया और उसे ढोंगी कहने लगा और उसने रहषु से कहा कि माता को यहाँ बुलाओं। इस पर रहषु ने राजा से कहा की यदि माँ यहाँ पर आई तो राज्य को बर्बाद कर देगी लेकिन राजा नही माना। रहषु भगत के आहवाहन पर देवी माँ कामाख्या से चलकर, पटना और सारण के आमी होते हुए गोपालगंज के थावे पहुँची। और माँ के पहुँचते ही राजा के सभी भवन गिर गए। इसके बाद राजा मर गए। एक अन्य मान्यता के अनुसार हथुआ के राजा युवराज शाही बहादुर ने वर्ष 1714 में थावे दुर्गा मंदिर की स्थापना उस समय की जब वे चम्पारण केक जमींदार काबुल बडहरिया से दसवीं बार लड़ाई हारने के बाद फौज सहित हथुवा वापस लौट रहे थे। इसी दौरान थावे जंगल में एक विशाल वृक्ष के नीचे पड़ाव डालकर आराम करने के समय उन्हे अचानक स्वप्न में माँ दुर्गा दिखी। स्वप्न में राजा ने देखा कि काबुल मोहम्मद बड़हरिया पर आक्रमण कर विजय हासिल की और कल्याणपुर, हुसेपुर, सेलारी, भेलारी तुरकहा और भुरकाहा को अपनें राजा के अधीन कर लिया। विजय हासिल करनें के बाद उस वृक्ष के चार कदम उत्तर दिशा में राजा ने खुदाई कराई, जहाँ पर राजा ने दस फुट नीचे वन की प्रतिमा मिली और वहीं मंदिर की स्थापना की गई।

सप्तमी की पूजा का विशेष महत्व

थावें दुर्गा मंदिर में सप्तमी के दिन होने वाली पूजा का विशेष महत्व है। इस पूजा में भाग लेने के लिए भक्त दूर-दूर से मंदिर में पहुँचतें है।

करीब एक घण्टें तक चलने वाली इस पूजा के बाद लोगों में प्रसाद वितरण किया जाता है । इसके प्रति लोगों में बड़ी आस्था है । जो लोग माता के दरबार में नहीं पहुँच पाते उनकी मनोकामना माता के दरबार में जाने कि हमेशा होती है ।

आरती के समय कपाट बंद हो जाते है ।

यह माना जाता है की माता की आरती के वक्त इसके कपाट बंद कर दिए जाते है । माँ की आरती जय अंबे गौरी, मैया जय अंबे गौरी आरती यहाँ कई सालों से हो रही है। इस मंदिर की एक विशेषता यह है कि नवरात्र के अतिरिक्त बाकी दिनों में आरती केवल सांयकाल में होती है । दोनो नवरात्रों में दोनो समय आरती का विधान है ।

यहाँ भक्त की पुकार पर प्रकट हुई थी देवी

वहाँ के मुख्य पुजारी सुरेश पाण्डेय का कहना है कि मंदिर का इतिहास तीन सौ साल पुराना है लेकिन देवी की पूजा आदिकाल से पूरी भक्ति व निष्ठा के साथ की जाती है । उनके मुताबिक माँ भगवती यहाँ भक्त की पुकार पर प्रकट हुई थी । यहाँ पूजा अर्चना करने से भक्तों की हरेक मनोकामना पूर्ण होती हैं

भक्तों की है अगाघ श्रद्धा

मंदिर के भक्त जीतेन्द्र गुप्ता के मुताबिक यहाँ आने वाले प्रत्येक श्रद्धालु की माँ थावें भवानी मन्नतें पूर्ण करती है । नवरात्र के दौरान यहाँ पूजा अर्चना करने का विशेष महत्व है ।

नवम्बर राशिफल

1 नवम्बर 2020 का फल लग्न के आधार पर किया गया है आने वाला नवम्बर का महीना सभी जातकों के लिए कैसा होने वाला है तथा जातकों को कौन सा फल देने वाला है इन सब बातों को हम नवम्बर में आने वाली राशियों के अनुसार जानेगें । साल 2020 की शुरूआत में गुरू (वृहस्पति) धनु राशि में होगा उसके बाद गुरू का गोचर नवम्बर में मकर राशि में होगा आइये जानते है नवम्बर 2020 में सभी राशि के जातकों का राशिफल कैसा होगा । वैदिक ज्योतिष पर आधारित भविष्यफल पढ़ने के बाद आप साल 2020 में होने वाले सभी प्रकार के घटना-दुर्घटना से पूर्व में ही परिचित हो जायेगें और आशा ही नही पूर्ण विश्वास है की आप नए वर्ष की पूरी योजना बनाने में सफल रहेंगे । यह भविष्यवाणी चन्द्र राशि, लग्न तथा वैदिक ज्योतिष के आधार पर किया गया है ।

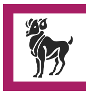

मेष राशि

मेष राशि वाले जातक का नवम्बर माह विशेष रूप से करियर के क्षेत्र में मेष राशि वाले कोई बड़ा निर्णय ले सकते है । अगर हम बात करें कार्यक्षेत्र कि तो आपको किसी तरह का विवाद परेशान कर सकता है, और साथ ही साथ सहकर्मियों कि वजह से आप निराश हो सकते है । इस महीने आप धन से जूड़ी समस्याओं को दूर करने के लिए कोई नयी तरकीब या नया निर्णय ले सकते है । आपको पारिवारकि जीवन में इस महीने बहुत ही सम्भलकर चलने कि जरूरत होगी । छात्र-छात्राओं के लिए यह माह सुखद रहेगा । इस नवम्बर महीने में मेष राशि वाले प्रेमी जातकों के संबंधो के बारे में घरवालों को पता चल सकता है । इस महीने आपको चेहरे और गले से जुड़ी समस्या हो सकती है ।

उपाय : प्रतिदिन सूर्योदय के समय श्री मंगल ध्यान मंत्र का जाप करें ।।

वृषभ राशि

वृषभ राशि वाले जातकों का नवम्बर माह उनके करियर के क्षेत्र कि बात करें तो नवम्बर माह बहुत ही शुभ होने वाला है वृष राशि वाले जातकों को इस माह विदेश जाना पड़ सकता है । वही इस राशि के जातकों को अपने आर्थिक पक्ष पर विशेष रूप से थोड़ा ध्यान देना होगा । भावनाओं में आकर ज्यादा खर्च ना करें, पारिवारिक स्तर पर भी बात करें तो इन्हे अच्छे फलों कि प्राप्ति होगी । परन्तु इस राशि के जातकों के विद्यार्थियों को बहुत ही सोच समझकर चलना होगा, और आपका गलत व्यवहार आपके लिए बहुत ही घातक सिद्ध हो सकता है । प्रेम में पड़े हुए वृषभ राशि के जातकों को मन-वांछित फल मिलने कि संभावना है । और इस जातक को अपने स्वास्थ्य को लेकर सावधानी बरतनी होगी क्योंकि इस माह आपके घुटनों और हाथों में कुछ परेशानी हो सकती है जिससे कि बहुत सारी दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है ।

उपाय : प्रतिदिन सुबह के समय श्री विष्णु स्तुति का जाप करें ।

मिथुन राशि

मिथुन राशि वाले जातकों का इस माह विशेष रूप से करियर के क्षेत्र में बहुत ही संभलकर चलने कि जरूरत है । इस माह आपकों आर्थिक पक्ष में मजबूती मिलने कि संभावना है । इस महीने आपकों पारिवारिक जीवन में भी अच्छे फलों कि प्राप्ति होगी और इनका वैवाहिक जीवन भी सामान्य बना रहेगा । इस राशि के विद्यार्थी इस माह किसी परीक्षा में भी उत्तीर्ण हो सकते है । नवम्बर के इस महीने में शुक्र, बुध, बृहस्पति और सूर्य ग्रह अपना राशि परिवर्तन करेंगे । इस राशि के जातक को प्रेम के नये अनुभव हो सकते है । और मिथुन राशि वालों को अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए बहुत सी कोशिशें करनी होगी । और स्वाथ्य्य कि बात करें तो मिथुन राशि वाले जातकों को इस माह बाये पैर, हाथ और सिर से जुड़ी दिक्कतें हो सकती है ।

उपाय : प्रतिदिन सुबह के समय ऊँ नमः भगवते वासुदेवाय नमः मंत्र का 108 बार जाप करें ।।

कर्क राशि

कर्क राशि वाले जातकों कि बात करें तो इस राशि के कारोबारियों के लिए नवम्बर माह

अच्छा साबित होगा। इस महिने आपकों अपने कार्यक्षेत्र में भी अच्छे फलो कि प्राप्ति होगी। इस माह कर्क राशि के जातकों का आर्थिक पक्ष भी मजबूत होनें कि सम्भावना है तथा पारिवारिक जीवन में इन्हे सचेत रहना होगा। इस राशि के जातक जो प्रेम सम्बन्ध में पड़े है उनके लिए नवम्बर महीना बहुत ही अच्छा होने वाला है। तथा इस महीने जो विद्‌यार्थी जातक है उच्च शिक्षा प्राप्त करने का प्लान बना सकते है और वही जो जातक प्रेम संबंध में पड़े है वह अपने लाइफ पार्टनर के साथ किसी लम्बी यात्रा पर जा सकते है। और अगर स्वास्थ्य कि बात करें तो इस माह आपका स्वास्थ्य बेहतरीन रहेगा और आप हर पल का आनन्द ले सकते है।

उपाय : प्रतिदिन सुबह के समय 'श्री महाकालेश्वर महादेव आरती' का पाठ करें।

सिंह राशि

सिंह राशि के जातकों का करियर कि बात करें तो ग्रहों की चाल बता रही है कि इस माह आपकों अपने कार्यक्षेत्र में थोड़ा संभलकर चलना होगा। और इस राशि के जातक के कारोबारियों को अपने आने वाले समय में अच्छे फल अवश्य मिलेंगे। सिंह राशि के जातक का आर्थिक पक्ष अच्छा रहने कि उम्मीद है। वही सिंह राशि वालों के पारिवारिक जीवन में भी अच्छे फलों की प्राप्ति होगी। आपका पारिवारिक जीवन बहुत ही खुशहाल रहेगा। आपके माता-पिता से इस माह सम्बन्ध अच्छे बनेंगे और इस माह आप अपने माता-पिता के साथ काफी समय भी बिता सकते है। वही बात करे विद्यार्थियों कि तो विदेशो में जाकर शिक्षा आर्जित करने की चाह रखने वाले विद्याार्थीयों के लिए यह महीना अच्छा होने वाला है और आपकी विदेश जाकर पढ़ने कि कामना इस महीनें पूरी हो सकती है। प्रेमी जातक इस महीने अपने लवमेट के साथ अच्छा सम्बन्ध रखेंगे। वही अगर इस राशि के जातक के स्वास्थ्य कि बात करें तो इस महीने आपकों कँधो और कमर से जुड़ी हुई कुछ परेशानियों से दो चार होना पड़ सकता है।

उपाय : प्रतिदिन सूर्योदय के समय 'श्री सूर्य बीज मंत्र' का जाप करें।

कन्या राशि

बात करें कन्या राशि कि तो इस महीने कन्या राशि वाले जातकों को करियर के क्षेत्र में बहुत मेहनत करनी होगी।वही इस राशि के जिन-जिन लोगों ने अपना नया बिजनेस शुरू किया है उनका यह महीना चुनौतियों भरा हो सकता है। इस राशि के जातकों का आर्थिक पक्ष में मजबूती आ सकती है। और बात करें पारिवारिक जीवन कि तो इसमें भी आपकों अच्छे फलों कि प्राप्ति हो सकती है। यह नवम्बर का महीना विद्यार्थियों के लिए अच्छा रहने की पूरी उम्मीद है। अतः वैवाहिक जीवन के जातकों के लिए यह महीना शुभ फलदायक रहेगा। लेकिन इस महीने कन्या राशि वालों को अपने स्वास्थ्य का विशेष रूप से ध्यान देना होगा क्योंकि इस माह आपकों आँखो, कानों और फेफड़े से जुड़ी कुछ स्वास्थ्य समस्या हो सकती है। इसीलिए आप ज्यादा तली भुनी हुई चीजों को खाने से बचें, नही तो आप गैस कि समस्या से परेशान हो सकते है।

उपाय : सूर्योदय के समय प्रतिदिन 'श्री कृष्ण वन्दना' का जाप करें।

तुला राशि

तुला राशि कि बात करें तो इस महीने करियर के क्षेत्र में अच्छें फलों कि प्राप्ति हो सकती है। इस महीने तुला राशि के जातक नौकरी पेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में अच्छा फल मिल सकता है। इस माह तुला राशि के लोगों कि आर्थिक पक्ष में मजबूती आ सकती है। तुला राशि वालों को इस महीने पारिवारिक जीवन में माता का सहयोग प्राप्त होगा। और छात्रों कि बात करें तो इनका पढ़ाई के प्रति रूख सकारात्मक रहेगा।इस माह में प्रेमी जातक के जीवन कि दिक्कतें दूर हो सकती है। और हम स्वास्थ्य कि बात करें तो इस महीने आपकों पेट, कमर, और पीठ के निचले हिस्से में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं हो सकती है।

उपाय : प्रतिदिन सूर्योदय के समय श्री महागौरी वंदना का जाप करें।।

वृश्चिक राशि

वृश्चिक राशि वाले जातकों को इस महीने कार्यक्षेत्र में बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। वृश्चिक राशि वाले कुछ जातकों को इस महीने अपने जॉब से भी हाथ धोना पड़ सकता है। वहीं इस राशि के कारोबारियों की बात करें तो उनका का आर्थिक जीवन भी ठीक-ठाक रहेगा और आपको अपने पारिवारिक जीवन में भी अच्छे फलों कि प्राप्ति होगी। अर्थात् इस राशि के जो प्रेमी जातक है। और जो प्रेम संबंधो में है उनमें किसी कारणवश दूरियाँ भी आ सकती है और कँधो से जुड़ी समस्याएँ हो सकती है। अतः इन समस्याओं से खुद को बचाने के लिए सुबह और शाम को आपकों सैर जरूर करनी चाहिए जिससे आपके स्वास्थ्य में काफी ज्यादा सुधार हो सकते है।

उपाय : प्रतिदिन आप सूर्योदय के समय ऊँ नमः मंत्र का 108 बार जाप करें।

धनु राशि

बात करें अगर धनु राशि कि तो इस समय करियर के क्षेत्र में आपकों काफी अच्छी सफलता पाने के लिए बहुत मेहनत करनी होगी। इस राशि के कई जातकों कि इस माह नौकरी जा सकती है। वहीं अगर धनु राशि के आर्थिक पक्ष कि बात करें तो इसमें भी आपकों कई चुनौतियों का सामना करना, पड़ेगा, और आपके खर्चो में भी इस महीने वृद्धि हो सकती है। और इस राशि के जातको के पारिवारिक जीवन कि बात करें तो उसके घर के किसी सदस्य कि तबीयत खराब हो सकती है, जिस वजह से आप बहुत परेशान भी रह सकते है। आपका प्रेम और वैवाहिक जीवन इस महीने सामान्य रहने कि उम्मीद है। बात करे इस राशि के विद्यार्थियों द्वारा इस महीने पाठ्‌यक्रम से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण किताबों की खरीदारी की जा सकती है। और बात करें धनु राशि के जातकों के स्वास्थ्य कि तो इस महीने कान, दांत और

घुटनों से संबंधित परेशानियां भी हो सकती है
उपाय : प्रतिदिन सूर्योदय के समय हनुमान चालीसा का पाठ करें

मकर राशि

मकर राशि वाले जातको को इस महीने करियर के क्षेत्र में आपकों अच्छे फल मिलने की पूरी उम्मीद है। इस महीने आपके ऑफिस का माहौल अच्छा रहेगा। इस राशि के जातक को आर्थिक रूप में फल अच्छे मिलेंगे और आप पैसों की बचत कर पाने में भी कामयाब होंगे। और पारिवारिक जीवन में आपकों कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। और प्रेम में पड़े जातकों को इस महीने थोड़ा सम्भलकर चलना पड़ सकता है। वही शादी शुदा लोगो की बात की जाए तो इस महीने जीवनसाथी से बेवजह कि बातों पर झगड़ा कर सकते है। इस राशि वालों के स्वास्थ्य कि बात करें तो मकर राशि के लोगों को इस महीने सिर से सम्बन्धित समस्याएं हो सकती है।
उपाय : प्रतिदिन सूर्योदय के समय ऊँ नमः शिवाय मंत्र का 108 बार जाप करें ।

कुंभ राशि

कुंभ राशि वालों जातकों का इस महीने करियर के क्षेत्र में आपकों सामान्य रिजल्ट मिलेंगे। हालांकि इस राशि वालों के जातकों को विदेश जाने का मौका भी मिल सकता है। और अगर आप अपने आर्थिक पक्ष में सुधार करना चाहतें है तो आपकों सोच समझकर इस महीने खर्च करना होगा। और पारिवारिक जीवन कि बात करे तो आपको अपने पिता के स्वास्थ्य पर खास ध्यान देने की जरूरत है। क्योंकि ग्रह नक्षत्रों को देखते हुए यह बताया गया है कि इस महीने उन्हे कोई नई बीमारी लग सकती है। वहीं मगर विद्यार्थियों की बात करें तो यह महीना उनके लिए अनुकूलन रहने वाला है तथा उन्हे शिक्षा में अच्छे परिणाम मिलेंगे। यह महीना कुंभ राशि के प्रेमी जातकों के लिए तथा वैवाहिक जीवन वालों के लिए सामानय रहेगा तथा इस महीने अपने जीवनसाथी की माता के साथ आपकी कहासुनी होने कि सम्भावना भी है। और अगर इस राशि वालों के स्वास्थ्य कि बात करें तो खासकर आपकों कान और फेफड़ों से सम्बन्धित कुछ समस्याएं इस महीने हो सकती है।
उपाय : सूर्योदय के समय श्री गणेश स्तुति का जाप करें ।।

मीन राशि

इस महीने अगर मीन राशि के करियर कि बात करें तो इस क्षेत्र में कुछ परेशानियाँ आ सकती है। इसके अलावा आपको अपने काम के सम्बन्धों में यात्रा भी करनी पड़ सकती है। और आर्थिक पक्ष आपका इस समय सामान्य रहेगा। पारिवारिक जीवन कि बात करें तो सामान्य रहेगा, माता के साथ आपके सम्बन्ध इस समय बिगड़ सकते है। यह महीना विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा रहने वाला है। शिक्षा के क्षेत्र में इस महीने आप अपने बौद्धिक कौशल से अच्छे परिणाम प्राप्त कर सकते है। ग्रहो की दशा बता रही है कि दाम्पव्य जीवन और प्रेम जीवन कि बात करें तो इस महीने थोड़ा सचेत रहने कि जरूरत है क्योंकि आपको पीठ के बीच वाले हिस्से गले और घुटनों से संबन्धी परेशानियां भी हो सकती है।
उपाय : प्रतिदिन सूर्योदय के समय ऊँ गौरवनाथ नमः मंत्र का 108 बार जाप करें।

कुशीनगर

कुशीनगर का इतिहास

कुशीनगर के अगर हम इतिहास के बारे में जानने कि कोशीश करें तो वर्तमान में कुशीनगर की पहचान कुसावती (पूर्व बुद्ध काल में) और कुशीनारा (बुद्ध काल के बाद) से की जाती है। कुशीनारा मल्ल गणराज्य की राजधानी थी जो छठी शताब्दी ईसा पूर्व के सोलह महाजनपदों में से एक थी। तब से यह मौर्य, शुंग, कुषाण, गुप्त, हर्ष और पाल राजवंशो के तत्कालीन साम्राज्यों का एक अभिन्न अंग रहा। मध्यकाल में कुशीनगर कुल्टी राजाओं की अधीनता में पारित हुआ था कुशीनारा 12वीं शताब्दी ईस्वी तक जीवित शहर रहा और उसके बाद गुमनामी में खो गया। माना जाता है कि पडरौना पर 15वी शताब्दी में एक राजपूत साहसी मदन सिंह का शासन था। सी.एल. कार्ललेइल ने मुख्य स्तूप को उजागर किया और 1876 में बुद्ध को प्राप्त करने के लिए 6.10 मीटर लम्बी प्रतिमा की खोज की। जे वोगेल के तहत 20वीं शताब्दी की शुरूआत में खुदाई जारी रही। आजादी के बाद, कुशीनगर देवरिया जिले का हिस्सा रहा। 13 मई 1994 को, उत्तर प्रदेश के एक नए जिले के रूप में अस्तित्व में आया। वर्ष 1876 ई. में अंग्रेज पुरातत्वविद ए. कनिंघम ने कुशीनगर की खोज की थी। उस समय खुदाई में छठी शताब्दी की बनी भगवान बुद्ध की लेटी हुई प्रतिमा मिली। छठी शताब्दी की शुरूआत में यहाँ भगवान बुद्ध का आगमन हुआ था। कुशीनगर में ही उन्होंने अपना अंतिम उपदेश देने के बाद महापरिनिर्वाण को प्राप्त किया था।

कुशीनगर का महत्व

कुशीनगर एवं कसया बाजार उत्तर प्रदेश के उत्तरी-पूर्वी सीमान्त्र इलाके में स्थित एक ऐतिहासिक स्थल है। यह एक बौद्ध तीर्थस्थल है जहाँ गौतम बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ था। अतः वर्तमान में यह कुशीनगर जिले के अन्तर्गत आता है। जो पहले इसका नाम कसया बाजार था वह अब कुशीनगर में बदल गया। कुशीनगर, राष्ट्रीय राजमार्ग 28 पर गोरखपुर से लगभग 50 किमी. पूरब में स्थित है। कुशीनगर से 20 किमी. पूरब की ओर जाने पर बिहार राज्य आरम्भ हो जाता है। यहाँ कई देशों के अनेक सुन्दर बौद्ध मन्दिर है। इस

कारण से यह एक अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल भी है जहाँ विश्व भर के बौद्ध तीर्थयात्री भ्रमण के लिए आते है। यहाँ पर आस-पास के लोगों की शिक्षा के लिए यहाँ बुद्ध स्नाकोत्तर महाविद्यालय, बुद्ध इण्टरमीडिएट कॉलेज, प्रबुद्ध सोसाइटी, भिक्षु संघ चन्दमणि निःशुल्क पाठशाला, महर्षि अरविन्द विद्या मंदिर तथा कई छोटे-छोटे विद्यालय भी है। कुशीनगर के आस-पास का क्षेत्र हिन्दु बहुल है। इस मेले में आस-पास की जनता पूर्ण श्रद्धा से भाग लेती है और विभिन्न मंदिरो में पूजा-अर्चना एवं दर्शन करती है।

प्रमुख आकर्षण :

निर्वाण स्तूप

निर्वाण स्तूप जो कि ईट और रोड़ी से बने हुए है 1876 में कालाईल द्वारा खोजा गया था। इस स्तूप की ऊँचाई 2.74 मीटर है। इस स्थान की खुदाई से एक ताँबे की नाव मिली है। इस नाव में खुदे अभिलेखों से पता चलता है कि इसमें महात्मा बुद्ध की चिता की राख रखी गई थी।

महानिर्वाण मंदिर

महानिर्वाण बोलीये या निर्वाण मंदिर कुशीनगर का प्रमुख आकर्षण है। इस मंदिर में महात्मा बुद्ध की 6.10 मीटर लंबी प्रतिमा स्थापित है। 1876 में खुदाई के दौरान यह प्रतिमा प्राप्त हुई थी। यह सुन्दर प्रतिमा चुनार के बलुआ पत्थर को काटकर बनाई गई थी। यह प्रतिमा के नीचे खुदे अभिलेख से पता चलता है कि इस प्रतिमा का सम्बन्ध पाँचवीं शताब्दी से है। कहा जाता है कि हरीवाला नामक बौद्ध भिक्षु ने गुप्त काल के दौरान यह प्रतिमा मथुरा से कुशीनगर लाया गया।,

आधुनिक स्तूप

कुशीनगर में अनेक बौद्ध देशों में आधुनिक स्तूपों और मठों नहीं का निर्माण करवाया है। चीन द्वारा बनवाए गए चीन मंदिर में महात्मा बुद्ध की सुन्दर प्रतिमा स्थापित है। इसके अलावा जापानी मंदिर में अष्ट धातु से बनी महात्मा बुद्ध की आर्कषक प्रतिमा देखी जा सकती है। इस प्रतिमा को जापान से लाया गया था।

बौद्ध संग्रहालय

कुशीनगर में खुदाई से प्राप्त अनेक अनमोल वस्तुओं को बौद्ध संग्रहालय में संरक्षित किया बौद्ध केन्द्र के निकट स्थित है। आसपास की खुदाई से प्राप्त अनेक सुन्दर मूर्तियों को इस संग्रहालय में देखा जा सकता है। यह संग्रहालय सोमवार के अलावा प्रतिदिन सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक खुला रहता है।

अन्य

कुशीनगर के पनियहवा में गंडक नदी पर बना पुल देखने में काफी रोचक लगता है। पड़रौना का बहुत पुराना राज दरबार भी पर्यटकों का दिल लुभाता है। कुशीनगर का सबसे बड़ा गांव जंगल खिरकिया में भव्य मंदिर है जहाँश्रद्धालुओं की भारी भीड़ लगी रहती है। ग्राम जंगल अमवा के समीप मुसहर टोली में बना पंचवटी पार्क भी देखने योग्य है।

त्रयम्बकेश्वर मंदिर

त्रयम्बकेश्वर ज्योर्तिलिंग मंदिर महाराष्ट्र प्रान्त के नासिक जिले में है यह निकटवर्ती ब्रम्ह गिरि नामक पर्वत से गोदावरी नदी का उद्‌गम है। और इन्ही गोदावरी के उद्‌गम स्थान के समीप त्रयम्बकेश्वर भगवान की भी बड़ी महिमा है। गौतम ऋषि तथा गोदावरी के प्रार्थनानुसार भगवान शिव इस स्थान में वास करने कि कृपा की और त्रयम्बकेश्वर नाम से विख्यात हुए। और इस मंदिर की एक खासियत यह है कि मंदिर के अन्दर एक छोटे से गढ़े में तीन छोटे-छोटे लिंग है, जो कि ब्रम्हा, विष्णु और शिव इस तीनों के प्रतीक माने जातें है। देखा जाये तो शिवपुराण के अनुसार मंदिर के ब्रम्हगिरी पवर्त के ऊपर जानें के लिए चौड़ी-चौड़ी सात सौ सीढ़ियाँ बनी हुई है। इन सीढ़ियों पर चलने के बाद 'रामकुण्ड' और 'लक्ष्मणकुण्ड' मिलते है और शिखर के ऊपर पहुंचने पर गोमुख से निकलती हुई भगवती गोदावरी के दर्शन होते है अतः इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अन्य सभी ज्योर्तिलिंगो में केवल भगवान शिव ही विराजत है।

निर्माण

इस प्राचीन मंदिर का पुनर्निर्माण तीसरे पेशवा बालाजी अर्थात् नाना साहब पेशवा ने करवाया था। इस मंदिर की पूरी मरम्मत 1755 में शुरू हुआ था और 31 साल के लम्बे समय के बाद 1786 में जाकर पूरा हुआ। कहा यह जाता है कि इस भव्य मंदिर के निर्माण कार्य में करीब 16 लाख रूपये खर्च किए गए थे, जो प्राचीन काल में इस समय की काफी बड़ी रकम मानी जाती थी। गोदावरी नदी के किनारें स्थित त्रयंम्बकेश्वर मंदिर का निर्माण काले पत्थरों से हुआ है। मंदिर का स्थापत्य अद्‌भुत है। इस मंदिर के पंचक्रोशी में कालसर्प शान्ति, त्रिपिंडी विधि और नारायण नागबली की पूजा सम्पन्न होती है। जिन्हे भक्तजन अलग-अलग मुराद पूरी होने के लिए करवाते है।

मंदिर

यह मंदिर गाँव के अन्दर कुछ दूर पैदल चलने के बाद मंदिर का मुख्य द्वार नजर आने लगता है और मंदिर के अन्दर गर्भग्रह में प्रवेश करने के बाद शिवलिंग की केवल आर्घा दिखाई देती है, लिंग नही। गौर से देखने पर आर्घा के अंदर एक-एक इंच के तीन लिंग दिखाई देते है इन तीनों लिंगो को त्रिदेव-ब्रम्हा-विष्णु-और महेश का अवतार माना जाता है। भोर के समय होने वाली पूजा के बाद इस आर्घा पर चाँदी का पंचमुखी मुकुट चढ़ा दिया जाता है।

स्थिति

त्रयम्बकेश्वर मंदिर और गाँव ब्रम्हगिरी नाम पहाड़ी की तलहटी में स्थित है इस गिरी को शिव का साक्षात रूप माना जाता है कहा जाता है कि इसी पर्वत पर पवित्र गोदावरी नदी का उद्‌गम स्थल है।

पौराणिक कथा

एक बार महर्षि गौतम के तपोवन में रहने वाले ब्राम्हणों की पत्नियाँ किसी बात बात पर उनकी पत्नी अहिल्या से नाराज हो गई। उन्होने अपने पतियों को ऋषि गौतम का अपमान करने के लिए प्रेरित किया। उन ब्राहम्णों ने इसके निमित्त् श्रीगणेश जी की अराधना की। उनकी अराधना से प्रसन्न होकर श्री गणेशजी वहाँ प्रकट होकर उनसे वर माँगने को कहा उन ब्राहम्णों ने कहा-प्रभु !

यदि आप हम पर प्रसन्न है तो किसी प्रकार ऋषि गौतम को इस आश्रम से बाहर निकाल दें। उनकी यहबात सुनकर गणेशजी ने उन्हें ऐसा वर माँगनें के लिए समझाया। किंतु वे अपने आग्रह नी अटल रहें। अंततः गणेशजी को विवश होकर उनकी बात माननी पड़ी। अपने भक्तों का मन रखने के लिए वे एक दुर्बल गाय का रूप धारण करके ऋषि गौतम के खेत में जाकर रहने लगे। गाय को फसल चरते देखकर ऋषि बड़ी नरमी के साथ हाथ में तृण लेकर उसे हाँकने के लिए लपके। उन तृणों का स्पर्श होते ही वह गाय वही मरकर गिर पड़ी उसके बाद वहाँ हाहाकार मच गया। सारे ब्राह्मण एकत्र होकर गौ हत्यारा कहकर ऋषि की मर्त्सना करने लगे। ऋषि गौतम इस घटना से बहुत आश्चर्यचकित और दुखी थे। फिर उन सारे ब्राहम्णों ने कहा कि तुम्हे यह आश्रम छोड़कर अन्यत्र कही दूर चले जाना चाहिए। गो-हत्योर के निकट रहने से हमें भी पाप लगेगा। अन्त में विवश होकर ऋषि गौतम अपनी पत्नी अहिल्या के साथ वहाँ से एक कोस दूर जाकर रहने लगे किन्तु उन ब्राह्मणों ने उनका वहाँ भी रहना मुश्किल कर दिया। वे कहने लगे गो हत्या के कारण तुम्हे अब वेद-पाठ और यज्ञादि के कार्य करने का कोई अधिकार नहीं रह गया। 'अत्यंत अनुनय भाव से ऋषि गौतम ने उन ब्राह्मणों से प्रार्थना की कि आप लोग मेरे प्रयाश्चित और उद्धार का कोई उपाएँ बताएँ। तब उन्होने कहा-गौतम ! तुम अपने पाप को सर्वत्र बताते हुए तीन बार पूरी पृथ्वी की परिक्रमा करो। फिर लौटकर यहाँ एक महीने तक व्रत करों। इसके बाद ब्रम्हगिरी की 101 परिक्रमा करनें के बाद तुम्हारी शुद्धि होगी अथवा यहाँ गंगाजी को लाकर उनके जल से स्नान करके एक करोड़ पार्थिव शिवलिंगो से शिवजी की आराधना करों इसके बाद पुनः गंगाजी में स्नान करके इस ब्रम्हगिरी की 11 बार परिक्रमा करों। फिर सौ घड़ों के पवित्र जल से पार्थिव शिवलिंगों को स्नान कराने से तुम्हारा उद्धार होगा। और जैसा की ब्राम्हणों के कथानुसार महर्षि गौतम वे सारे कार्य पूरे करके पत्नी के साथ पूर्णतः तल्लीन होकर भगवान शिव कि अराधना करने लगे। इससे प्रसन्न होकर भगवान शिव ने प्रकट होकर उनसे वर माँगने को कहा। महर्षि गौतम ने उनसे कहा-भगवान मैं यही चाहता हूँ कि आप मुझे गौ हत्या के पाप से मुक्त कर दें। भगवान शिव ने कहा-गौतम ! तुम सर्वथा निष्पाप हो। गो-हत्या का अपराध तुम पर छल पूर्वक लगाया गया था। छल पूर्वक ऐसा करवाने वाले तुम्हारे आश्रम के ब्राह्मणों को मै दण्ड देना चाहता हूँ। इस पर महार्षि गौतम ने कहा कि प्रभु! उन्ही लोगो के वजह से मुझे आपका दर्शन प्राप्त हुआ था। अब उन्हें मेरा परमहित समझकर उन पर आप क्रोध न करें। बहुत से ऋषियों मुनियों और देव गणों ने वहाँ एकत्र होकर गौतम की बात का अनुमोदन करते हुए भगवान शिव से वहाँ सदैव के लिए निवास करने को कहा और भगवान शिव से प्रार्थना की। वे उनकी बात मानकर वहाँ त्रयम्बक ज्योर्तिलिंग के नाम से स्थित हो गये। गौतमजी द्वारा लाई गई गंगाजी भी वहाँ पास में गोदावरी नाम से प्रवाहित होने लगी। यह ज्योर्तिलिंग समस्त पुण्यों को प्रदान करने वाला है।

उत्सव

कुशावर्त तीर्थ की जन्मकथा काफी रोचक है। कहते है ब्रम्हगिरी पर्वत से गोदावरी नदी बार-बार लुप्त हो जाती थी। गोदावरी के पलायन को रोकने के लिए गौतम ऋषि ने एक कुशा की मदद लेकर गोदावरी को बंधन में बाँध दिया। उसके बाद से ही इस कुण्ड में हमेशा लबालब पानी भरा रहता है। इस कुण्ड को ही कुशावर्त तीर्थ के नाम से जाना जाता है। कुंभ स्नान के समय शैव अखाड़े इसी कुंड में शाही स्नान करते है। इसके भ्रमण के समय त्रयंबकेश्वर महाराज के पंचमुखी सोने के मुखौटो को पालकी में बैठाकर गाँव में धुमाया जाता है। फिर मंदिर में लाकर हीरेजड़ित स्वर्ण मुकुट पहनाया जाता है। यह पूरा दृश्य त्रयंबक महाराज के राज्याभिषेक सा महसूस होता है। इस यात्रा को देखना बेहद ही सुखद और अलौकिक होता है। और शिवरात्रि और सावन के सोमवार के दिन त्रयम्बकेश्वर मंदिर में भक्तों की ताँता लगी रहती है। जितने भी भक्त है भोर के समय स्नान करके अपने अराध्य के दर्शन करते है। और एक खासियत यहाँ कि यह है कि यहाँ कालसर्प योग और नारायण नागबलि नामक खास पूजा-अर्चना भी होती है, जिसके कारण यहाँ सालभर लोग आते रहते है।

महाकालेश्वर मंदिर

महाकालेश्वर मंदिर भारत के बारह ज्योर्तिलिंग में से एक है। यह मध्यप्रदेश राज्य के उज्जैन नगर में स्थित महाकालेश्वर भगवान का प्रमुख मंदिर है। पुराणों, महाभारत और कालिदास जैसे महान कवियों की रचनाओं में इस मंदिर का मनोहर वर्णन मिलता है। इसके दर्शन मात्र से ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है ऐसी मान्यता है। महाकवि कालिदास ने मेधदूत में उज्जायिनी की चर्चा करते हुए इस मंदिर की प्रशंसा की है। 1235 ई. में इल्तुतमिश के द्वारा इस प्राचीन मंदिर का विध्वंस किये जाने के बाद से यहाँ जो भी शासक रहे, उन्होने इस मंदिर के पूरी मरम्मत और सौन्दर्यीकरण की ओर विशेष ध्यान दिया, इसलिए मंदिर अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त कर सका है प्रतिवर्ष और सिंहस्थ के पूर्व इस मंदिर को सुसज्जित किया जाता है।

इतिहास

महाकालेश्वर के इतिहास से यह पता चलता है कि उज्जैन में सन् 1107 से 1728 ई. तक यवनों का शासन था। इनके शासनकाल में अवंति की लगभग 4500 वर्षो में स्थापित हिन्दुओं की प्राचीन धार्मिक परंपराए प्रायः नष्ट हो चुकी थी। लेकिन 1960 ई. में मराठों

ने मालवा क्षेत्र में आक्रमण कर दिया और 29 नवम्बर 1728 को मराठा शासकों ने मालवा क्षेत्र में अपना अधिपत्य स्थापित कर लिया। इसके बाद उज्जैन का खोया हुआ गौरव पुनः वापस लौट आया और सन् 1731 से 1809 तक यह नगरी मालवा की राजधानी बनी रही। अतः मराठों के शासनकाल में यहाँ दो महत्वपूर्ण घटनाएं घटी पहला महाकालेश्वर मंदिर का पुनः निर्माण और ज्योतिर्लिंग की पुनप्रतिष्ठता तथा सिंहस्थ पर्व स्थान की स्थापना की जो एक बहुत बड़ी उपलब्धी थी। आगे चलकर राजा भोज ने इस मंदिर का विस्तार किया।

वर्णन

महाकालेश्वर मंदिर विशेष रूप से एक परकोटे के भीतर स्थित है यहाँ गर्भगृह तक पहुंचने के लिए एक सीढीदार रास्ता है। और इसके ठीक उपर एक दूसरा कक्ष है जिसमें ओंकारेश्वर शिवलिंग स्थापित है। और मंदिर के क्षेत्रफल की बात करें तो मंदिर का क्षेत्रफल 10.77 × 10.77 वर्गमीटर और ऊँचाई 28.71 मीटर है। महाशिवरात्रि एवं श्रावण मास में हर सोमवार को इस मंदिर में आपार भीड़ होती है। मंदिर के पास ही लगा हुआ एक छोटा सा जलस्रोत है जिसे कोटितीर्थ कहा जाता है। अतः वहाँ कि ऐसी मान्यता है कि इल्तुत्मिश ने जब मंदिर को तुड़वाया तो शिवलिंग को इसी कोटितीर्थ में फिकवा दिया। इसकी पुनः स्थापना करवायी गयी थी। सन् 1968 के सिंहस्थ महापर्व के मुख्य द्वार का विस्तार कर सुसज्जित कर लिया गया था। इसके अलावा निकासी के लिए अन्य द्वार का निर्माण भी कराया गया। महाकालेश्वर मंदिर की व्यवस्था के लिए एक प्रशासनिक समिति का गठन किया गया है। जिसके निर्देशन में यहाँ की व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है हाल ही में इसके 118 शिखरों पर 16 किलों स्वर्ण की परत चढ़ाई गई है।

महाकालेश्वर की कथा

यूँ तो इस मंदिर का काफी महत्व है यहाँ सालों साल भक्तों का ताँता लगा रहता है लेकिन इस बात को बहुत कम लोग जाने है कि भगवान महाकालेश्वर ज्योर्तिलिंग की उत्पत्ति कैसे हुई थी। पौराणिक कथाओं के अनुसार उज्जायिनी में राजा चन्द्रसेन का राज था। वह भगवान शिव के परम् भक्त थे और शिवगुणों में मुख्य मणिभद्र नामक गण राजा चंद्रसेन के मित्र थे। एक बार राजा के मित्र मणिभ्रद ने राजा चंद्रसेन को एक चिंतामणि प्रदान की जोकी बहुत ही तेजोमय थी। राजा चन्द्रसेन ने मणि को अपने गले में धारण कर लिया, लेकिन मणि को धारण करते ही पूरा प्रभामण्डल जगमगा उठा और इसके साथ ही दूसरे देशो में भी राजा की यश कीर्ती बढ़ने लगी। राजा के प्रति सम्मान और यश देखकर अन्य राजाओं ने मणि को प्राप्त करने के लिए भी प्रयास किया। लेकिन मणि राजा की अत्यन्त प्रिय थी। इस कारण से राजा ने किसी को मणि नही दी। इसलिए राजा द्वारा मणि न देने पर अन्य राजाओं ने आक्रमण कर दिया। उसी समय राजा चन्द्रसेन भगवान महाकाल की शरण में जाकर ध्यानमग्न हो गए। जब राजा चन्द्रसेन बाबा महाकाल के समाधिस्थ में थे, तो उस समय वहाँ गोपी अपने छोटे बालक को साथ लेकर दर्शन के लिए आई। बालक की उम्र महज पाँच वर्ष थी और गोपी विधवा थी। राजा चन्द्रसेन को ध्यानमग्न होते हुए उस छोटे बालक ने देखकर बालक भी शिव पूजा करने के लिए प्रेरित हो गया, वह कही से पाषाण ले आया और अपने घर में एकांत स्थल में बैठकर भक्तिभाव से शिवलिंग की पूजा करने लगा। कुछ समय बाद वह भक्ति में इतना लीन हो गया की माता के बुलाने पर भी वह नहीं सुना। क्रोधित हुई माता ने उसी समय बालक को पीटना शुरू कर दिया और पूजा का सारा समान उठाकर फेंक दिया। ध्यान से मुक्त होकर बालक चेतना में आया तो उसे अपनी पूजा को नष्ट होते देखकर बहुत दुःख हुआ। अचानक उसकी व्यथा का गहराई से चमत्कार हुआ। भगवान शिव कि कृपा से वहाँ एक सुंदर मंदिर निर्मित हुआ। मंदिर के मध्य में दिव्य शिवलिंग विराजमान था एवं बालक द्वारा सज्जित पूजा यथावत थी यह सब देखकर माता भी आश्चर्य चकित हो गई। जब राजा चन्द्रसेन को इस घटना की जानकारी मिली तो वे भी उस बालक से मिलने पहुंचे। राजा चन्द्रसेन के साथ-साथ अन्य राजा भी वहाँ पहुंचे। सभी ने राजा चन्द्रसेन से अपने अपराध की क्षमा मांगी और सब मिलकर भगवान महाकाल की पूजा-अर्चना करने लगे। तभी वहाँ रामभक्त श्री हनुमान जी सामने आए और उन्होने गोप-बालक की गोद में बैठकर सभी राजाओं और उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित किया। आर्थत शिव के अतिरिक्त प्राणियों की कोई गति नहीं है इस गोप बालक ने अन्यत्र शिव पूजा को मात्र देखकर ही, बिना किसी मंत्र अथवा विधि विधान के शिव आराधना कर शिवत्व -सर्वविध, मंगल को प्राप्त किया है यह शिव का परम श्रेष्ठ भक्त समस्त गोपजनों की कीर्ति बढ़ाने वाला है इस लोक मे यह अखिल अनंत सुखो को प्राप्त करेगा व मृत्योपरांत मोक्ष को प्राप्त होगा इसी के वंश का आठवां पुरूष महायशस्वी नंद होगा, जिसके पुत्र के रूप में स्वयं नारायण कृष्ण नाम से प्रतिष्ठित होंगे। कहा जाता है भगवान महाकाल तब से ही उज्जायिनी में स्वयं विराजमान है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में महाकाल की असीम महिमा का वर्णन मिलता है। महाकाल को वहाँ का राजा कहा जाता है और उन्हे राजाधिराज देवता भी माना जाता है।

हनुमान जयन्ती

हनुमान जयन्ती एक हिन्दू पर्व है। जो कि चैत्र माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है और अधिकतर हिन्दूवासी हनुमान जयन्ती के त्यौहार के दिन को हनुमान जी के जन्म दिवस के रूप में मानते है। हनुमान जी भगवान शिव के अवतार थे इसलिए इनको कलयुग में सबसे प्रभावशाली देवताओं में से एक माने जाते है।

अतः भगवान विष्णु जी के कृष्ण अवतार के बाद रावण को दिव्य शक्ति प्रदान हो गई । जिससे की रावण ने अपनी मोक्ष प्राप्ति हेतु शिवजी से वरदान माँगा की उन्हें मोक्ष प्राप्ति के लिए कुछ उपाया बतायें । तब शिवजी ने राम के हाथों मोक्ष प्राप्ति कराने के लिए एक लीला रची । अर्थात् शिव जी की लीला के अनुसार उन्होने हनुमान जी के रूप में जन्म लिया ताकि रावण को मोक्ष की प्राप्ति दिलवा सके । रावण को मोक्ष की प्राप्ति दिलवाने के कार्य में स्वयं शिवजी के अवतार हनुमान जी आये थे । जो की सदैव के लिए अमर हो गए और रावण के वरदान के साथ-साथ उसे मोक्ष भी दिलवाया ।

कार्यक्रम व महत्व

हनुमान जयन्ती के दिन सभी भक्त एवं श्रद्धालु हनुमान जी के मंदिर में पूजा अर्चना करने जाते है । और वही कुछ भक्त हनुमान जी का व्रत रखकर भी उनकी श्रद्धा से पूजा करने जाते है चूँकि यह कहा जाता है तथा यह मानी जानी बात है कि हनुमान जी बाल ब्रम्हचारी थे इसलिए उन्हे जनेऊ भी पहनाया जाता है । और वहीं हनुमान जी की मूर्तियों पर सिंदूर और चाँदी का वर्क चढ़ाने कि परम्परा सदियों से चली आ रही है इसके अनुसार कहा जाता है कि राम की लम्बी उम्र के लिए एक बार हनुमान जी अपने पूरे शरीर पर सिंदूर चढ़ा लिया था और इसी कारण से उन्हे और उनके भक्तों को सिन्दूर चढ़ाना बहुत अच्छा लगता है जिसे चोला भी कहा जाता है । इनकी पूजा संध्या के समय दक्षिण मुखी हनुमान मूर्ति के सामने शुद्ध होकर मन्त्र का जाप करने को अत्यन्त महत्व दिया जाता है । इसके अलावा हनुमान जंयती पर रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड पाठ को पढ़ना भी हनुमानजी को प्रसन्न करता है । सभी मंदिरो में इस दिन तुलसीदासकृत, रामचरितमानस एवं हनुमान चालीसा का पाठ होता है और जगह-जगह भण्डारे भी आयोजित किये जाते है । तमिलनाडू व केरल में हनुमान जंयती मार्गशीर्ष माह की अमावस्या को तथा उड़ीसा में वैशाख महीने के पहले दिन मनाई जाती है । वहीं कर्नाटक व आन्ध्र प्रदेश में चैत्र पूर्णिमा से लेकर वेशाख महीने के 10 वे दिन तक यह त्यौहार मनाया जाता है ।

हनुमान का नामकरण

हनुमान जी का नामकरण के पीछे भी एक कहानी छुपी हुई है । इन्द्र के वज्र से हनुमान जी की ठुड्डी (संस्कृत में बोले तो हनु) टूट गई थी । जिसके कारण हनुमान जी का नाम हनुमान रख दिया गया । देखा जाए तो श्री राम भक्त हनुमान जी के अनेको नाम है जिनमें से इनके बजरंग बली, मारूति, अंजनि सुत, पवनपुत्र, संकटमोचन, केसरीनन्दन, महावीर, कपीश, संकर सुवन, आदि महत्वपूर्ण है ।

हनुमान जयन्ती पर कौन सी अराधना क्या फल देगी, जरूर पढ़े :

आइए जानते है कि हनुमानजी की कौन सी साधना से किस तरह से सारे कष्ट मिट जाते है।

<u>हनुमान चालीसा :</u> जो व्यक्ति नित्य सुबह और शाम हनुमान चालीसा पढ़ता रहता है उसे कोई भी व्यक्ति बंधक नही बना सकता । उस पर कारागार का संकट कभी नहीं जाता । यदि किसी व्यक्ति को अपने किए हुए कुकर्मो के कारण जेल हो गई है तो, उसे संकल्प लेकर क्षमा प्रार्थना करना चाहिए । और उसे कभी भी कभी कोई कुकर्म न करने का वचन देते हुए हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करना चाहिए । अगर हनुमान जी की कृपा हुई तो कारागार से ऐसे व्यक्ति मुक्त हो जायेंगे ।

<u>बजरंग बाण :</u> बहुत से व्यक्ति ऐसे होते है जो आपने कार्य एवं व्यवहार से लोगो को रूष्ट कर रहे हैं, इससे उनके शत्रु बढ़ जाते है । कुछ लोगों को स्पष्ट बोलने की आदत होती है जिसके कारण उनके गुप्त शत्रु भी होते है और यह भी हो सकता है कि आप सभी तरह से अच्छे है फिर भी आपकी तरक्की से लोग जलतें हो और आपके विरूद्ध षडयंत्र रचते है । ऐसे समय में यदि आप सच्चे है तो श्री बजरंग बाण आपकों बचाता है और शत्रुओं को दंड देता है । बजरंग बाण से शत्रु को उसके किए की सजा मिल जाती है, लेकिन इसका पाठ एक जगह बैठकर अनुष्ठनपूर्वक 21 दिन तक करना चाहिए और हमेशा सच्चाई के मार्ग पर चलने का संकल्प लेना चाहिए, क्योंकि हनुमानजी सिर्फ पवित्र लोगो का ही साथ देते है । 21 दिन में तुरंत फल मिलता है ।

<u>हनुमान बाहुक :</u> यदि आप गाठिया, वात, सिरदर्द, कंठ रोग, जोड़ो का दर्द आदि तरह के दर्द से परेशान है, जो जल का एक पात्र सामने रखकर हनुमान बाहुक का 26 या 21 दिनों तक मुहूर्त देखकर पाठ करें । प्रतिदिन उस जल को पीकर दूसरे दिन दूसरा जल रखें । हनुमानजी की कृपा से शरीर की समस्त पीड़ाओं से आपकों मुक्ति मिल जाएगी ।

<u>हनुमान मंत्र :</u> यदि आप अंधेरे, भूत प्रेत से डरते है या किसी प्रकार का भय आपकों परेशान कर रहा है तो आप 'हं हनुमते नमः' का रात को सोने से पूर्व हाथ-पैर और कान-नाक धोकर पूर्वाभिमुख (पूरब की ओर मुँह करके) होकर 108 बार जप करके सो जाएं । कुछ ही दिनों में धीरे-धीरे आपमें निर्भीकता का संचार होने लगेगा ।

<u>हनुमान जी का चोला :</u> हनुमान जंयती और उसके बाद प्रति मंगलवार एवं शनिवार को हनुमान मंदिर में जाकर गुड़ और चना अर्पित करें और घर में सुबह-शाम हनुमान चालीसा का नित्य पाठ करें । और पाठ करने के बाद उठने के बाद में आधे घण्टे तक किसी से भी बात न करें और ऐसा करते-करते जब 21 दिन पूरे हो जाए तो हनुमान जी को चोला चढ़ाए । हनुमानजी तुरंत ही घर में सुख-शन्ति कर देंगे ।

यदि शनि ग्रह से है परेशान तो यह उपाय करें

<u>शनि ग्रह पीड़ा से मुक्ति :</u>

हनुमान जी का नित्य पाठ करने से जिस पर हनुमानजी की कृपा दृष्टि बनी रहती है, उसका शनि और यमराज भी बाल बांका नही कर सकते । आप शनि ग्रह की पीड़ा से अगर छुटकारा पाना चाहते है तो प्रति मंगलवार हनुमान मंदिर जाएं और शराब व मांस के सेवन से तो बिल्कुल ही दूर रहें । इसके अलावा शनिवार को सुन्दरकांड या हनुमान चालीसा का पाठ करने से शनि भगवान आपको लाभ देने लगेंगे ।

पति की लम्बी आयु के लिए करते है करवा चौथ का व्रत

करवा चौथ का त्यौहार दुनियाँ की सभी हिन्दू स्त्रियों का एक प्रमुख त्यौहार है यह त्यौहार, भारत के पंजाब, उत्तर प्रदेश हरियाणा, मध्यप्रदेश और राजस्थान का पर्व है । यह त्यौहार कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है । यह पर्व विशेष रूप से सौभाग्यवती (सुहागिन) स्त्रियाँ मनाती है परन्तु ऐसा बिल्कुल भी नही है कि कुवाँरी लड़कीया इस व्रत को नही करती है । कुवाँरी लड़कियों का भी इस व्रत को करने की परम्परा आज भी प्रचलित है । यह भी अपनी पूरी श्रद्धा से अपनी मनोकामनाओं को पूर्ण करने के लिए यह करवा चौथ का व्रत रखती है । यह व्रत सूर्योदय से पहले 4 बजे के बाद शुरू होकर रात में चन्द्रमा दर्शन के बाद संपूर्ण होता है । पति की दीर्घ आयु एवं अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति के लिए ग्रामीण तथा आधुनिक महिलाओं तक सभी नारियाँ यह करवाचौथ का व्रत पूरी श्रद्धा एवं उत्साह के साथ रखती है । पति की लम्बी आयु व सौभाग्य प्राप्ति के लिए इस दिन भालचन्द्र गणेश जी की पूजा की जाती है । अतः करवा चौथ व्रत में भी महिलाएं संकष्टीगणेश चतुर्थी की तरह दिन भर उपवास रखकर रात्रि में चन्द्रमा को अर्ध्य देकर ही अपने व्रत को पूर्ण करती है । इस व्रत को किसी भी आयु, जाति, वर्ग, सम्प्रदाय वाली स्त्रियों को करने का पूरा-पूरा अधिकार होता है । जो भी स्त्रियाँ यह व्रत करती है उन्हें इस व्रत को कम से कम 12 वर्ष या 16 वर्ष तक अवश्य करना चाहिए । अतः 12 या 16 वर्ष की अवधि पूरी होने के पश्चात् इस व्रत का उद्‌यापन (उपसंहार) किया जाता है । अर्थात् जो स्त्रियाँ इस व्रत को जीवन भर रखना चाहती है वे जीवन भर इस व्रत को श्रद्धापूर्वक रख सकती है । वैसे तो भारत देश में करवाचौथ माता जी के कई मंदिर होंगे परन्तु सबसे प्राचीन एवं प्रसिद्ध चौथ माता कां मंदिर राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले के चौथ का बरवाड़ा गाँव में स्थित है । चौथ माता के नाम पर ही इस गाँव का नाम बरवाड़ा से चौथ का बरवाड़ा पड़ गया । आपकों बता दे कि इस चौथ माता मंदिर की स्थापना महाराजा भीमसिंह चौहान ने किया था ।

व्रत की विधि

- व्रत के दिन प्रातः स्नान करने के बाद 'मम सुखसौभाग्य पुत्रपौत्रादि सुस्थिर भी प्राप्तये करक चतुर्थी व्रत महं करिष्ये । यह संकल्प लेकर करवा चौथ का आरम्भ करे।
- व्रत के दिन सभी स्त्रियाँ निर्जला व्रत रखें
- दीवार पर गेरू से फलक बनाकर पिसे हुए चावल के धोल से करवा चित्रित करें इसे वर कहते है चित्रित करने की कला को करवा धरना कहा जाता है ।
- आठ पूरियों की अठावरी बनाएं । हलुआ बनाएं, पक्के पकवान बनाएं, पीली मिट्टी से गौरी बनाएं और उनकी गोद में गणेशजी बनाकर बिठाएं ।
- गौरी माता को लकड़ी के आसन पर बिठाएं । तथा चौक बनाकर आसन को उस पर रखें । गौरी को चुनरी ओढ़ाएं । बिंदी आदि सुहाग सामग्री से गौरी माता का श्रृंगार करें ।
- जल से भरा हुआ लोटा पूजा स्थान पर रखे
- माता को भेंट देने के लिए मिट्टी का टोंटीदार करवा लें, करवा में गेहूँ और ढक्कन का बूरा भर दे, उसके उपर दक्षिणा रख दें ।
- रोली से करवा पर स्वास्तिक बनाएं ।
- गौरी-गणेश और चित्रित करवा की परंपरा अनुसार पूजा करें और पति की दीर्घायु की कामना करें ।
- करवा पर 13 बिंदी रखें और गेहूं या चावल के 13 दाने हाथ में लेकर करवा चौथ की कथा कहें या सुने ।
- कथा सुनने के बाद करवा पर हाथ धुमाकर अपनी सासुजी के पैर छूकर आर्शीवाद ले और करवा उन्हे दे दे ।
- तेरह दाने गेहूं के और पानी का लोटा या टोटी दार करवा अलगर रख ले ।
- रात्रि में चन्द्रमा निकलने के बाद छलनी की ओट से उसे देंखे और चन्द्रमा की अर्ध्य दे ।
- इसके बाद पति से आशीर्वाद ले । उन्हे भोजन कराएं और स्वयं भी भोजन कर लें।

करवा चौथ व्रत कथा के बाद जरूर पढ़ें ये आरती :

ऊँ जय करवा मइया, माता जय करवा मइया ।
जो व्रत करे तुम्हारा, पार करो मइया ।।
ऊँ जय करवा मइया ।
सब जग की हो माता, तुम हो रूद्राणी ।
यश तुम्हारा गावत, जग के सब प्राणी ।।
ऊँ जय करवा मइया ।
कार्तिक कृष्ण चतुर्थी, जो नारी व्रत करती ।
दीर्घायु पति होवे, दुख सारे हरती ।।
ऊँ जय करवा मइया ।

करवा चौथ व्रत कथा :

बहुत समय पहले की बात है, एक साहुकार के सात बेटे और उनकी एक बहन थी जिसका नाम करवा था । सभी सातों भाई अपनी बहन करवा से बहुत ही ज्यादा प्यार करते थे । यहाँ तक की सारे भाई पहले अपनी बहन को खाना खिलातें फिर बाद में खुद ही खाते थे । एक बार उनकी बहन ससुराल से मायके आयी हुई थी । शाम को जब करवा के भाई अपना व्यापार - व्यवसाय बंद करके घर वापस आयें तो देखा की उनकी बहन बहुत ही व्याकुल थी । जब सभी भाई खाना खाने गये तो उन्होने अपनी बहन से भी खाना खाने का आग्रह करने लगे लेकिन बहन से खाना खाने से इनकार कर दिया उसने बोला की आज उसका करवा चौथ का निर्जला व्रत है और वह खाना सिर्फ चन्द्रमा को देखकर उसे अर्ध्य देकर ही खा सकती है । चूँकि चन्द्रमा अभी तक नही निकला है, इसलिए वह भूख-प्यास से व्याकुल हो उठी है, सबसे छोटे भाई को अपनी बहन करवा की हालत देखी नही जाती और वह दूर पीपल के पेड़ पर एक दीप जलाकर चलनी की ओर में रख देता है । अतः दूर से देखने पर वह ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे चतुर्थी का चाँद उदित हो रहा हो । इसके बाद भाई अपनी बहन को

तुम उसे अर्ध्य देने के बाद भोजन कर सकती हो । बहन खुशी के मारे सीढ़ियों पर चढकर चाँद को देखकर उसे अर्ध्य देकर खाना खाने बैठ जाती है । वह जैसे ही पहला टुकडा अपने मुँह में डालती है उसे छींक आ जाती है । जैसे ही दूसरा टुकडा डालती है उसमें बाल आ जाता है और जैसे ही तीसरा टुकडा मुँह में डालने की कोशिश करती है तो उसके पति की मृत्यु का समाचार उसे मिलता है । वह बौखला जाती है । तब उसकी भाभी करवा को उसकी सच्चाई से अवगत करवाती है । कि उसके साथ ऐसा क्यो हुआ उसकी भाभी ने बताया की करवा चौथ का व्रत गलत तरीके से टूटने के कारण देवता उससे नाराज हो गए है और उन्होने ही ऐसा किया है । सच्चाई से अवगत होने के बाद करवा निश्चय करती है वह अपने पति का अंतिम संस्कार किसी भी हालत में नही होने देगी और अपने सतीत्व से उन्हे पुर्नजीवन दिलाकर रहेगी । वह पूरे एक साल अपने पति के शव के पास बैठी रहती है । उसकी देखभाल करती है । उसके ऊपर उगने वाले सुईनुमा धास को वह एकत्रित करती जाती है । ऐसे ही कई दिन बितने के बाद एक साल बाद फिर करवाचौथ का व्रत आता है । उसकी सभी भाभियों से 'यम सूई ले लो' 'पिय सूई दे दों' मुझे भी अपनी जैसी सुहागिन बना दो, ऐसा आग्रह करती है, लेकिन हर बार भाभी उसे अगली भाभी से आग्रह करने को कह कर चली जाती है । इसी प्रकार जब छठें नम्बर की भाभी आती है तो करवा उससे भी यही बात दोहराती है । यह भाभी उसे बताती है क्योंकि सबसे छोटे भाई की वजह से उसका व्रत टूटा था अतः उसकी पत्नी में ही शक्ति है कि वह तुम्हारे पति को दोबारा जीवित कर सकती है, इसलिए जब वह आए तो तुम उसे पकड़ लेना और जब तक वह तुम्हारे पति को जिन्दा ना कर दे, उसे नही छोड़ना ऐसा कहकर वह चली जाती है । सबसे अंत में छोटी भाभी आती है । करवा उनसे भी सुहागिन बनने का आग्रह करती है, लेकिन वह टालमटोली करने लगती है । इसे देखकर करवा उन्हे जोर से पकड़ लेती है और अपने सुहाग को जिन्दा करने के लिए कहती है । भाभी उससे छुड़ाने के लिए नोचती है, खसोटती है, लेकिन करवा उन्हे नही छोड़ती है । अंत में करवा की तपस्या को देखकर उसकी भभी पसीज जाती है और अपनी छोटी अंगुली को चीरकर उसमें से अमृत उसे पति के मुंह में डाल देती है । करवा का पति तुरंत श्री गणेश-श्री गणेश कहता हुआ उठ बैठता है । इस प्रकार प्रभु कृपा से उसकी छोटी भाभी के माध्यम से करवा को उसका सुहाग वापस मिल जाता है । हे श्री गणेश-माँ गौरी जिस प्रकार करवा को चिर सुहागन का वरदान आपसे मिला है वैसा ही सब सुहागिनों को मिले ।

<u>करवा चौथ पर्व तिथि व मुहूर्त 2020</u>

करवा चौथ 4 नवम्बर, 2020

करवा चौथ पूजा मुहूर्त - 17:29 से 18:48

चंद्रोदय - 20:16

चुतर्थी तिथि आरम्भ - 03:24 (4 नवम्बर)

चतुर्थी तिथि समाप्त - 05:14 (5 नवम्बर)

Kundali expert
How to Join
"ASTROLOGY COURSE "

Get Information
Broucher
WEEKEND CLASSES
Only Through Mobile APP
Download KUNDALI EXPERT Mobile APP
Google Play
App Store

अष्टम स्थान पर शनि का प्रभाव

अष्टम भाव का कारक शनि ग्रह को माना जाता है । अष्टम स्थान आयु, मृत्यु, पैतृक संपत्ति, आकस्मात धन लाभ का होता है । शनि तुला में उच्च का और मेष मे नीच का होता है । शनि एक राशि में ढाई साल रहता है, और शनि की ढैय्या और साढ़े साती का विशेष महत्व है । प्रत्येक लग्न में अष्टम स्थान में शनि का क्या प्रभाव पड़ता है । आइऐ समझतें है ।

<u>1. मेष लग्न</u>

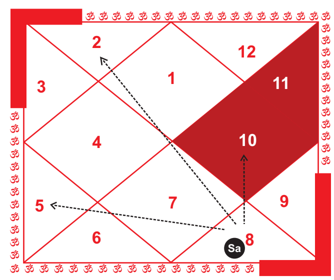

- यदि वृच्छिक का शनि लग्न से अष्टमेश मृत्यु आयु एवं पुरातत्व स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग में अपने क्षेत्र से कमजोरी पाकर दूसरे स्थान शक्ति का फयादा उठायेगा ।
- अष्अमेश शनि के बैठने से आयु में उत्तम शक्ति प्राप्त करेगा और तृतीयेश दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि मे स्वक्षेत्र को देख रहा है लेकिन मृत्यु स्थान में बैठने के दोष के कारण पिता की शक्ति का अल्प लाभ पाएगा और राज-समाज में कम मान प्राप्त करेगा ।

- उन्नति पाने के लिए कठिन प्रयास करेगा और सप्तमेश मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है इसलिए धन और परिवार के मामले में विशेष सफलता मिलेगी।
- दशमेश शत्रु दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है इसलिए विद्या और संतान पक्ष में उदासीनता रहेगी। बुद्धि क्रोध और वाणी में तेजी रहेगी और अपने मान सम्मान का गुप्त रूप से ख्याल रखेगा।

2. वृष लग्न

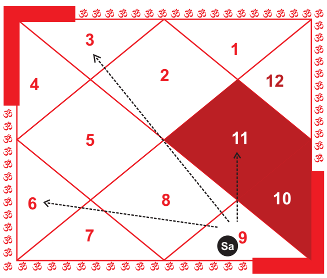

- अष्टम भाव आयु एवं मृत्यु स्थान में धनु राशि पर आसीन है जिसका स्वामी शत्रु गुरू है आयु पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ अच्छी सुख-लाभ की प्राप्ति होगी। भाग्य पक्ष से कुछ सुख लाभ में कमी रहेगी तथा धर्म-कर्म के कार्यो में अरूचि रहेगी। पितृ पक्ष से सुख-लाभ की कमी रहेगी।
- तीसरी दृष्टि से दशम भाव राज्य एवं कारोबार स्थान को स्वयं अपनी कुंभ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है जिससे कारोबार के क्षेत्र में कुछ कठिनाई से सफलता प्राप्त होगी कारोबार के क्षेत्र में कुछ कठिनाई से सफलता प्राप्त होगी तथा समाज में मान सम्मान की प्राप्ति में कुछ कमी रहेगी।
- सातवीं दृष्टि से द्वितीय भाव धन-सम्पति एवं कुटुम्ब स्थान को मिथुन राशि में देख रहा है जिसका स्वामी बुध है जिससे कुछ कठिनाई के साथ धन-धान्य की प्राप्ति के लिये सदैव प्रयास में लगा रहेगा तथा कुटुम्ब पक्ष से सुख की प्राप्ति कुछ परेशानी से प्राप्त होगी।

- दसवीं दृष्टि से पंचम त्रिकोण भाव विद्या एवं संतान स्थान को कन्या राशि में देख रहा है जिसका स्वामी बुध है जिससे विद्या एवं संतान पक्ष में कुछ कठिनाईयों के साथ भाग्य के सहयोग से सुख-लाभ की प्राप्ति होगी।

3. मिथुन लग्न

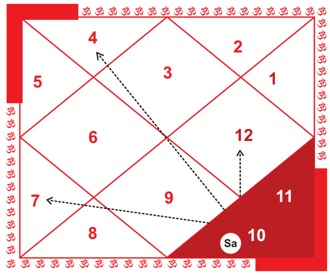

- अष्टम भाव आयु स्थान में स्वक्षेत्र होकर बैठने की वजह से आयु पक्ष मजबुत होगा तथा पुरातत्व क्षमता का लाभ प्राप्त होगा। धर्म पालन में अरूचि तथा कुछ मान-सम्मान में कमी रहेगी।
- तीसरी शत्रु दृष्टि से पिता स्थान को गुरू की मीन राशि में देख रहा है जिससे पितृ पक्ष से सुख लाभ में कुछ कमी रहेगी तथा रोजगार के क्षेत्र में कुछ कठिनाईयों के साथ सफलता प्राप्त होगी।
- सावतीं शत्रु दृष्टि से धन स्थान को चन्द्र की कर्क राशि में देखने की वजह से धन संचय में कमी रहेगी।
- दसवीं उच्च दृष्टि से संतान स्थान को शुक्र की तुला राशि में देखने की वजह से विद्या व संतान पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ सफलता प्राप्त होगी तथा वाणी की उतम क्षमता व कुशलता के द्वारा जीवन में उन्नति एवं भाग्य में वृद्धि के लिये सफल प्रयास करेगा तथा भाग्यशाली होगा।

4. कर्क लग्न

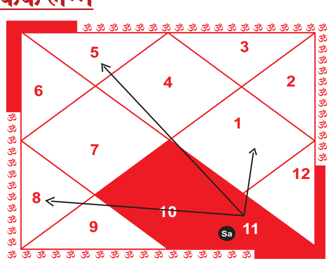

- यदि मेष का शनि दसम केन्द्र पिता स्थान में नीच का होकर शत्रु मंगल की राशि में बैठा है तो पिता स्थान के सुख में बाधा प्राप्त करेगा तथा राज-समाज कारोबार के संबंधा में एवं उन्नति के मार्ग में परेशानियां प्राप्त करेगा।
- तीसरी मित्र दृष्टि से खर्च स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है इसलिए खर्च अधिक रहेगा।
- सातवीं उच्च दृष्टि से सुख भवन को शुक्र की तुला राशि में देख रहा है इसलिए मकान जायदाद व घरेलू सुख के साधन प्राप्त करेगा।
- दसवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मकर राशि मे जीवन साथी एवं रोजगार की शक्ति प्राप्त करेगा तथा भोगादिक मार्ग में प्रयत्नशील रहेगा और अष्टमेश होने के दोष के कारण परेशानियों के साथ कार्य का संचालन करेगा तथा गुप्त नीति से भी कार्य करता रहेगा।

5. सिंह लग्न

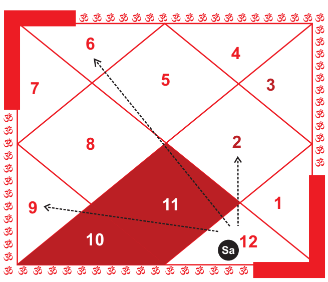

- अष्टम भाव आयु एवं मृत्यु स्थान पर मीन राशि में विराजमान है जिसका स्वामी गुरू है। जिससे जीवन साथी एवं रोजगार पक्ष में परेशानियों का सामना रहेगा तथा शत्रु पक्ष में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा अष्टम भाव में बैठा शनि आयु की वृद्धि का कारक होता है जिससे आयु पक्ष मजबुत होगा।
- तीसरी दृष्टि से दशम भाव राज्य एवं कारोबार स्थान को वृषभ राशि में देख रहा है जिसका स्वामी मित्र शुक्र है जिससे कारोबार के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी तथा समाज में मान-सम्मान की प्राप्ति होगी।

- सातवीं दृष्टि से द्वितीय भाव धन-सम्पति एवं कुटुम्ब स्थान को कन्या राशि में देख रहा है जिसका स्वामी मित्र बुध है जिससे धन-लाभ की प्राप्ति अच्छी रहेगी तथा कुटुम्ब पक्ष से सुख-लाभ की प्राप्ति होगी।
- दसवीं दृष्टि से पंचम त्रिकोण भाव विद्या एवं संतान स्थान को धनु राशि को देख रहा है जिसका स्वामी गुरू है जिससे संतान पक्ष एवं विद्या - लाभ पक्ष में कुछ कमी प्राप्त होगी।

6. कन्या लग्न

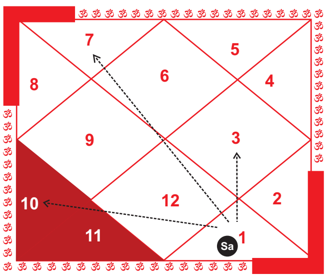

- यदि मेष का शनि अष्टम भाव आयु स्थान में नीच का होकर शत्रु मंगल की राशि पर बैठने की वजह से आयु पक्ष के मामले में चिंता की स्थिति रहेगी, कई बार जिंदगी के जंग का सामना करना पड़ सकता है। पुरातत्व पक्ष से सुख की कमी रहेगी । संतान पक्ष सुख-लाभ की कमी तथा दुख प्राप्त होगा विद्या लाभ में कमी रहेगी शत्रु पक्ष से परेशानी का सामना करना पड़ेगा।
- तीसरी मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्यस्थान को बुध की मिथुन राशि में देखने की वजह से पितृ पक्ष से कुछ परेशानी के साथ सुख की प्राप्ति होगी तथा कारोबार के क्षेत्र में बुद्धि-ज्ञान की क्षमता से लाभ की प्राप्ति होगा।
- सातवीं उच्च दृष्टि से धन स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है जिससे धन-जन की वृद्धि व लाभ के लिये उतम प्रयास करेगा।
- दसवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मकर राशि में संतान एवं विद्या स्थान को स्वक्षेत्र में देखने की वजह से संतान एवं विद्या पक्ष के मामले में कुछ कमी की स्थिति रहेगी।

7. तुला लग्न

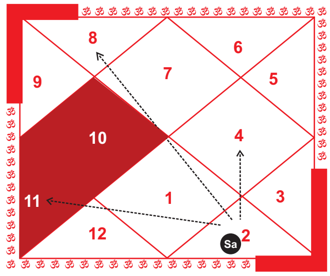

- आठवें आयु मृत्यु एवं गुप्त स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो माता के सुख में कमी होगी तथा भूमि की थोड़ी सी पैतृक शक्ति और जीवन को सहायक होने वाली गुप्त शक्ति का लाभ पायेगा।
- आठवें स्थान पर शनि दीर्घायु करता है इसलिए आयु की वृद्धि करेगा तथा विद्या और संतान में कुछ कमी और कष्ट पायेगा।
- तीसरी शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है इसलिए पिता के संबंध में कुछ मतभेद रहेगी तथा समाज में कमी का संबंध और उन्नति के मार्ग में उदासीनता पायेगा।
- सातवीं शत्रु दृष्टि से धन एवं परिवार स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है इसलिए धन कोष में कमी रहेगी तथा परिवार पक्ष में कुछ उदासीनता का योग पायेगा।
- दसवीं दृष्टि से संतान एवं विद्या स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में देख रहा है इसलिए विद्या एवं संतान पक्ष में सुख शक्ति मिलेगी।

8. वृश्चिक लग्न

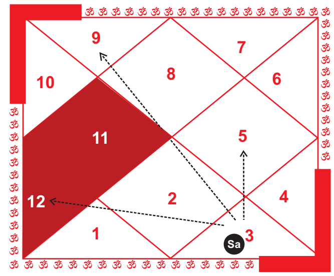

- अष्टम भाव आयु एवं मृत्यु स्थान मित्र बुध की मिथुन राशि पर विराजमान है जिससे आयु पक्ष में मजबुती प्राप्त होगी तथा पुरखों की सम्पति का लाभ प्राप्त होगा । भाई-बहन पक्ष से सुख-लाभ की कमी रहेगी तथा मातृ पक्ष से सुख-सहयोग में कमी रहेगी तथा भूमि-मकानादि तथा घरेलु सुख साधान की प्राप्ति में कुछ कमी रहेगी।
- तीसरी दृष्टि से दशम भाव राज्य एवं कारोबार स्थान को शत्रु सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है जिससे कारोबार के क्षेत्र में कठिनाईयों की स्थिति के साथ लाभ-सफलता प्राप्त होगी तथा समाज में मान-सम्मान की कमी रहेगी।
- सातवीं दृष्टि से द्वितीय भाव धन-सम्पति एवं कुटुम्ब स्थान को शत्रु गुरू की धनु राशि में देख रहा है जिससे धन-लाभ की प्राप्ति एवं वृद्धि में कमी रहेगी तथा कुटुम्ब पक्ष से सुख-सहयोग की कमी रहेगी।
- दसवीं दृष्टि से पंचम त्रिकोण भाव विद्या एवं संतान स्थान को शत्रु गुरू की मीन राशि में देख रहा है जिससे संतान पक्ष से सुख-लाभ की कमी रहेगी तथा विद्या ग्रहण के मामले में कमी रहेगी।

9. धनु लग्न

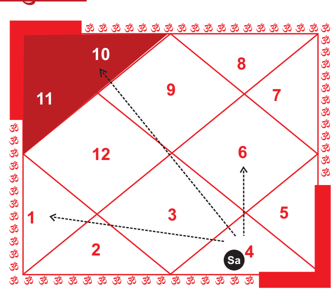

- अष्टम भाव आयु एवं मृत्यु स्थान में शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर विराजमान है जिससे पैतृक सम्पति का लाभ प्राप्त होगा किंतु जीवन के रहन सहन में कुछ परेशानी की स्थिति रहेगी तथा आठवें स्थान पर शनि आयु की वृद्धि का कारक होता है इसलिये आयु पक्ष की मजबुती की स्थिति प्राप्त होगी। छोटे भाई-बहन पक्ष से सुख लाभ में कुछ कमी रहेगी तथा धन-संचय में कुछ कमी की स्थिति रहेगी। पुरूषार्थ क्षमता में कुछ कमी की स्थिति रहेगी।
- तीसरे दृष्टि से दशम भाव राज्य एवं कारोबार स्थान को मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है जिससे कारोबार के क्षेत्र में कुछ लाभ-सफलता की प्राप्ति होगी तथा समाज में कुछ मान-सम्मान की प्राप्ति होगी।
- सातवीं दृष्टि से द्वितीय भाव धन-सम्पति एवं कुटुम्ब स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है जिससे धन-लाभ की प्राप्ति का योग रहेगा तथा कुटुम्ब पक्ष से कुछ सुख-सहयोग की प्राप्ति होगी।
- दसवीं दृष्टि से पंचम त्रिकोण भाव विद्या एवं संतान स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशि में नीच का होकर देख रहा है जिससे विद्या लाभ ग्रहण में परेशानी एवं कमी की स्थिति रहेगी तथा सन्तान पक्ष से सुख सहयोग में कमी रहेगी।

10. मकर लग्न

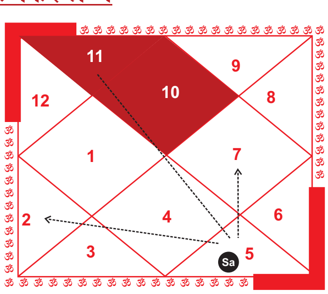

- यदि सिंह का शनि अष्टम भाव मृत्यु एवं आयु स्थान में तथा पुरातत्व स्थान में शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर बैठा है तो शारीरिक परेशानी रहेगी सुन्दरता व स्वास्थता में कमी रहेगी जन-धन के संबंधो में भी परेशानी रहेगी।
- आठवें स्थान पर शनि आयु की वृद्धि का घोतक है, इसलिये आयु के पक्ष में बलवान होगा पुरातत्व शक्ति का लाभ प्राप्त होगा
- तीसरी उच्च दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को शुक्र की तुला राशि में देखने की वजह से पितृ पक्ष से सुख व लाभ प्राप्त होगा तथा समाज में मान-सम्मान प्राप्त होगा।
- सातवीं दृष्टि से धन तथा कुटुम्ब स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशि में देखने की वजह से धन और कुटुम्ब की शक्ति का कुछ सहयोग प्राप्त करेगा दसवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देखने की वजह से विद्या का लाभ प्राप्त होगा तथा सन्तान पक्ष से सुख प्राप्त होगा तथा बुद्धिमान होगा।

11. कुम्भ लग्न

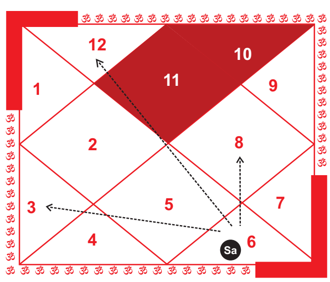

- यदि कन्या का शनि अष्टम भाव आयु, मत्यु एवं पुरातत्व स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठने की वजह से शारीरिक कष्ट व परेशानी प्राप्त होगा तथा खर्च के मामले में परेशानी रहेगी। बाहरी स्थानों के संबंध के मामले में कुछ कठिनाईयों के साथ लाभ प्राप्त होगा।
- व्ययेश दोष के साथ अष्टमेश दोष होने के कारण दोष दोगुना हो गया है जिससे परेशानी और बढ़जाती है किंतु आठवें स्थान पर शनि के बैठने के कारण आयु पक्ष मजबूत होगा तथा जीवन रक्षा होती रहेगी।
- तीसरी शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देखने की वजह से पितृ पक्ष के साथ मतभेद रहेगा तथा कारोबार के मामले में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।
- सातवीं शत्रु दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को गुरू की मीन राशि में देखने की वजह से धन व कुटुम्ब के मामले में चिंता बनी रहेगी।
- दसवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान पक्ष के मामले में लाभ की प्राप्ति होगी किन्तु व्ययेश दोष के कारण विद्या एवं संतान पक्ष के मामले में कुछ परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

12. मीन लग्न

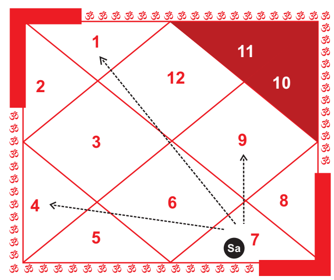

- अष्टम भाव आयु एवं मृत्यु स्थान में मित्र शुक्र की तुला राशि में उच्च का होकर आसीन है जिससे आयु पक्ष में मजबुती प्राप्त होगी तथा पुरातत्व संबंध का लाभ प्राप्त होगा। आमदनी के क्षेत्र में सफलता बाहरी स्थानों के संबंध से प्राप्त होगी किंतु व्ययेश दोष एवं अष्टम भाव में स्थित होने का दोष के कारण आमदनी के क्षेत्र में परेशनी रहेगी तथा अधिक दौड़-धूप की स्थिति रहेगी।
- तीसरी दृष्टि से दशम भाव राज्य एवं कारोबार स्थान में शत्रु गुरू की धनु राशि को देख रहा है जिससे कारोबार के क्षेत्र में परेशानी का सामना करना पड़ेगा। समाज में मान-सम्मान की प्राप्ति में कमी की स्थिति रहेगी
- सातवीं दृष्टि से द्वितीय भाव धन-सम्पति एवं कुटुम्ब स्थान को शत्रु कुटुम्ब स्थान को शत्रं मंगल की मेष राशि में नीच का होकर देख रहा है

जिससे धन की संचय में कमी की स्थिति रहेगी। कुटुम्ब पक्ष से सुख लाभ में कमी रहेगी

- दसवीं दृष्टि से पंचम त्रिकोण भाव विद्या एवं संतान को शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है तथा व्ययेश दोष के कारण संतान पक्ष में सुख-लाभ में कमी रहेगी तथा विद्या ग्रहण में परेशानी का सामना रहेगा।

आपके प्रश्न ?

कुण्डली एक्पर्ट के लाइव प्रोगाम में जिन लोगो नें लाइव चैटिंग में प्रश्न पूछे थे। उनमें से कुछ के प्रश्नों के उत्तर यहां पर उपलब्ध है। महादेव लाइव प्रसारण में प्रत्येक रविवार के चैट में पूछे गये प्रश्नों के उतम इस मैगजिन में प्रकाशित होंगे।

प्रश्न : नाम दिपिका यादव जन्म : 05 फरवरी 1994 समय : 09:03 सुबह स्थान : डिगबोही, असम मेरा प्रश्न है कि मुझे सरकारी नौकरी कब मिलेगी और मेरी शादी कब होगी ?

उत्तर : आपकी कुण्डली मीन लग्न और वृश्चिक राशि की है कार्य स्थल का मालिक बृहस्पति लग्न से अष्टम में है और लग्नेश भी है अतः जॉब लगने में हमेशा परेशानियों का सामना करना पड़ेगा, बृहस्पति का बीज मंत्र करें और वर्तमान में शुक्र की महादशा चल रही है और 28/12/2020 के पहले विवाह के योग है, परन्तु वैवाहिक जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

प्रश्न : मेरा नाम अवधेश है जन्म : 20 मई 1990 समय : 04:20 मिनट सुबह स्थान : गोरखपुर मेरी सरकारी नौकरी कब लगेगी और मेरी शादी कब तक होगी और शादी लव होगी या अरेंज ?

उत्तर : आपकी कुण्डली मेष लग्न और मीन राशि है सरकारी नौकरी के योग नही है और शनि से सम्बन्धित कार्य करें। और प्रेम विवाह के आंशिक योग है।

प्रश्न : मेरा नाम सरीका यादव है जन्म : 14 मई 2000 समय 02:20 रात स्थान कुशीनगर क्या मेरा गर्वन्मेंट जॉब लगेगी और आगे मेरा Future कैसा रहेगा।?

उत्तर : आपका लग्न मीन है और चन्द्र राशि कन्या है कुण्डली में पाश्वीक दोष होने के कारण कठिनाईयों के साथ जीवन निर्वाह करना पड़ेगा। चन्द्रमा के मुद्रक दोष से पीड़ित है औश्र गर्वन्मेंट जॉब का मालिक सूर्य में 5 ग्रहों को अस्त कर रखा है और सरकारी नौकरी के योग कम है 5 कैरेट का पुखराज तर्जनी उंगली में धारण करें औश्र एक मोती धारण करें।

प्रश्न : मेरा नाम दीक्षा शर्मा है जन्म : 14 मार्च 1997 समय : 03:54 सुबह स्थान : गोरखपुर मेरी पढ़ाई और शादी की लाइफ कैसी होगी ?

उत्तर : आपका लग्न मकर और चन्द्र राशि वृष है, शिक्षा का मालिक शुक्र लग्न से द्वितीय भाव में सूर्य के साथ अस्त है अतः पढ़ाई में बाधाए रहेंगी प्रेम प्रसंग तो हो सकते है। परन्तु प्रेम विवाह नहीं होंगे, एक ऑस्ट्रेलियन फायर ओपर 12 कैरेट का दायें हाथ के तर्जनी में पहने, वैवाहिक जीवन संतुलित रहेगा।

प्रश्न : मेरा नाम मोनील है जन्म : 03 मार्च 1988 समय : 15:15 दोपहर स्थान : चित्तौड़गड़ (राजस्थान) आर्थिक स्थिति कब सुधरेगी ?

उत्तर : आपका लग्न कर्क और राशि सिंह है आर्थिक स्थिति का मालिक सूर्य अपने घर को देख रहा है और 2022 के बाद अपकी आर्थिक स्थिति ठीक हो जायेगी।

प्रश्न : मेरा नाम हितेश है जन्म 19 अप्रैल 1967 समय : 11:30 रात्रि स्थान : अहमदाबाद मुझै कौन सा व्यवसाय करना चाहिए ?

उत्तर : आपकी कुण्डली का लग्न धनु और चन्द्र राशि कर्क है दशम स्थान पर मंगल विराजमान है परन्तु शत्रु क्षेत्रिय है आपको कृषि या बैंकिंग फाइनेन्स से रिलेटेड काम करना चाहिए।

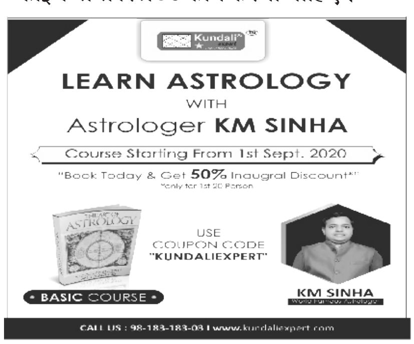

सब्सक्राइब कीजिए भारत की सबसे लोकप्रिय ज्योतिष पत्रिका

ज्योतिष विज्ञान

सफलतम् 1 ला वर्ष

हर अंक में विशेष

केवल ज्योतिष से सम्बन्धित मासिक पत्रिका
ज्योतिष सीखने के लिए अनेक लेख
वर्तमान में राशि परिवर्तन और उसका प्रभाव
महीने के व्रत त्यौहार इत्यादि
राजनीतिक विश्लेषण
अनेक विद्वानों द्वारा ज्योतिषीय विषय पर शोध

सदस्य शुल्क (प्रिंट एडिशन) (TAX सहित)

(साधारण डाक से)

वार्षिक 708
द्विवार्थिक 1298
त्रिवार्षिक 2360
आजीवन 12980

(कोरियर से)

वार्षिक 826
द्विवार्थिक 1416
त्रिवार्षिक 2478

(पंजीकृत डाक से)

वार्षिक 885
द्विवार्थिक 1475
त्रिवार्षिक 2537

सदस्यता शुल्क (डिजिटल एडिशन)

एक प्रति 35
वार्षिक 300

BANK DETAILS :
Name : **KM ASTROGURU PVT. LTD.**
A/C No. : 628605015394
IFSCE Code : ICICI0006286
Branch Add : R-1/88 RDC Raj Nagar Ghaziabad UP 201002
Type : CURRENT ACCOUNT

नवम्बर महीने में त्यौहार/व्रत

रवि SUN	कार्तिक कृष्ण 1 **1**	कार्तिक कृष्ण 7 **8**	कार्तिक कृष्ण 30 **15** स्नानदान की अमावास्या	कार्तिक शुक्ल 8 **22**	कार्तिक शुक्ल 14 **29** व्रत की पूर्णिमा
सोम MON	कार्तिक कृष्ण 2 **2**	कार्तिक कृष्ण 8/9 **9**	कार्तिक शुक्ल 1/2 **16** चन्द्र दर्शन	कार्तिक शुक्ल 9 **23**	कार्तिक शुक्ल 15 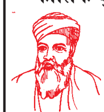 **30** गुरूनानक जयंती स्नानदान की पूर्णिमा
मंगल TUE	कार्तिक कृष्ण 3 **3**	कार्तिक कृष्ण 10 **10**	कार्तिक शुक्ल 3 **17**	कार्तिक शुक्ल 10 **24**	**विवाह-मुहूर्त** इस मास में विवाह मुहूर्त का आभाव है
बुध WED	कार्तिक कृष्ण 4 **4** सं. श्रीगणेश चतुर्थी	कार्तिक कृष्ण 11 **11** रम्भा एकादशी व्रत	कार्तिक शुक्ल 4 **18** वै. श्री गणेश चतुर्थी	कार्तिक शुक्ल 11 **25** प्रबोधिनी एकादशी स्मार्त	**मूल-विचार** ता. 8 आश्लेषा दिन 8/42 से ता. 10 मघा प्रातः 7/56 तक । ता. 16 ज्येष्ठा दिन 2/37 से ता. 18 मूल दिन 10/40 तक । ता. 25 रेवती सायं 6/20 से ता. 27 अश्विनी रात्रि 12/23 तक
गुरू THU	कार्तिक कृष्ण 5 **5**	कार्तिक कृष्ण 12 **12** धनतेरस	कार्तिक शुक्ल 5 **19**	कार्तिक शुक्ल 12 **26** प्रबोधिनी एकादशी वैष्णव	
शुक्र FRI	कार्तिक कृष्ण 5 **6**	कार्तिक कृष्ण 13 **13** प्रदोष, मासशिवरात्रि	कार्तिक शुक्ल 6 **20** सूर्य षष्ठी (डालाछठ)	कार्तिक शुक्ल 12 **27** प्रदोष व्रत	**पंचक-विचार** ता. समय 21 रात्रि 10/25 से 26 रात्रि 9/40 तक ।
शनि SAT	कार्तिक कृष्ण 6 **7**	कार्तिक कृष्ण 14 **14** दीपावली, बाल दिवस श्राद्ध की अमावास्या	कार्तिक शुक्ल 7 **21**	कार्तिक शुक्ल 13 **28**	

KM ASTROGURU PVT. LTD.

Regd Off.: B-1, 101, Block-E, Classic Residency Apartment Raj Nagar Extenion, Ghazabad

S.No.	

ADMISSION OPEN

For Astrology Course

AFFIX YOUR PHOTO

Course Name : 1 Year Basic Astrology Course ☐
2 Year Advanced Astrology Course ☐

1. Name of student: ______________________
(IN BLOCK LETTERS)

2. Father's Name/ Guardian's Name: ______________________
(IN BLOCK LETTERS)

3. Date of Birth : ______________________ 4. Religion: ______________________

5. Mobile/Telephone: ______________________ 6. Nationality : ______________________

7- Qualification: ______________________ 8. Email :______________________

9- Gender: ☐ Male ☐ Female 10. Parental's Alerts: ☐ Email ☐ SMS

11. Postal Address: ____
____

12. Class/Course to be joined: ______________ Timings:__________to:__________

13. Aadhar Card Number ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

14. Blood Group : ______________________

Signatue of the Applicant   Signatue of the Parents

-: FOR OFFICE USE ONLY :-

Receipt No.:
Dated :

Admin Signature ______________________

Kundali expert
For Better Future

KM SINHA

World Famous

-: ASTROLOGER :-

VISITING CENTER INDIA

Mumbai, Delhi, Kolkata, Chennai, Ahmedabad
Bhubneshwar, Chandigarh, Lucknow,
Jaipur, Gorakhpur, Ghaziabad, Bangalore, Hydeerabad

VISITING CENTER ABROAD

Indonesia, Australia
Philippines, USA, UK

KUNDALI EXPERT

B1- 101, Block E, Raj Nagar Extension, Ghaziabad 201017
Contact us : 98-183-183-03

Follow us: